Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 49 • 13 - 19 सितंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-09-2021 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं।
जे उ तत्थ विउस्संति संसारं ते विउस्सिया।।

अपने-अपने मत की प्रशंसा और दूसरे मतों की निंदा करते हुए जो गर्व से उछलते हैं वे संसार (जन्म-मरण की परंपरा) को बढ़ावा देते हैं।

पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस

मोक्ष मार्ग की विशेष आराधना का पर्व है पर्वाधिराज पर्युषण : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ४ सितंबर, २०२१

जैन धर्म श्वेतांबर परंपरा का पावन पर्वाधिराज पर्व–पर्युषण। आत्म साधना का विशेष पर्व। लौकिक पर्वों में तो खाने-पीने का आनंद लिया जाता है। संसार में सिर्फ पर्युषण पर्व ऐसा है, जिसमें सिर्फ त्याग की प्रवृत्ति होती है, छोड़ने का आनंद लिया जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ में इसका आयोजन विधिवत अलग-अलग प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों से किया जाता है। आज का दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में प्रतिष्ठित है।

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्युषण के प्रथम दिवस मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज जैन शासन की श्वेतांबर परंपरा के तेरापंथ संप्रदाय का पर्युषण पर्व प्रारंभ हो रहा है और भी अन्य संप्रदायों में आज से पर्युषण का प्रारंभ हुआ हो सकता है।

पर्युषण एक महत्त्वपूर्ण समय हमारे लिए होता है। पूरे वर्ष भर में एक अपेक्षा से चतुर्मास काल का बड़ा महत्त्व होता है। हम चारित्रात्माएँ चातुर्मास में विहार-यात्रा से विरत रहते हैं। एक सीमित क्षेत्र में अपना प्रवास-आवास करते हैं। आध्यात्मिक संदर्भ में भी शेषकाल का अपना महत्त्व है। चतुर्मास काल में आख्यान-व्याख्यान का लंबा क्रम चल सकता है। तपस्या-आराधना, स्वाध्याय, लेखन-पठन इनके लिए भी चारित्रात्माओं को एक अच्छा समय प्राप्त हो सकता है।

चतुर्मास में भी श्रावण और भाद्रव का महीना और ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इन महीनों में दिन बड़े होने से स्वाध्याय-पाठ आसानी से हो सकते हैं। इन महीनों में तपस्या का क्रम भी आमतौर से ज्यादा चलता है। लोगों की धार्मिक भावना भी अच्छी रहती है। इन दो महीनों में भाद्रव का महीना ज्यादा धर्माराधना का होता है। पर्युषण पर्वाधिराज का समागमन इसी महीने में होता है। दिगंबर परंपरा में भी दस लक्षण पर्व का समागमन इस भाद्रव महीने में होता है।

भाद्रव मास में हमारे धर्मसंघ के कई महत्त्वपूर्ण दिन भी आ जाते हैं। आज भाद्रव कृष्णा द्वादशी परमपूज्य जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस है। भाद्रवा शुक्ला षष्ठी परमपूज्य श्री कालूगणी का महाप्रयाण दिवस है। भाद्रव शुक्ला द्वादशी परमपूज्य डालगणी का महाप्रयाण दिवस है। भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी परमपूज्य महामना आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण दिवस है। भाद्र शुक्ला नवमी हमारा विकास महोत्सव का दिन है, जो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का पट्टोत्सव बहुत वर्षों तक मनाया जाता रहा है। भाद्रवा शुक्ला तीज परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का युवाचार्य मनोनयन का दिवस आ जाता है।

पर्युषण पर्व वर्ष में एक बार आता है। पूरे वर्ष में सबसे ज्यादा धर्माराधना का समय पूरे जैन शासन में भाद्रव मास होता है। सात दिन पर्युषण पर्व फिर आठवें दिन संवत्सरी महापर्व आ जाता है। सात दिन के पर्युषण की शुरुआत किस महापुरुष आचार्य ने की, यह शोध का विषय है। जिन्होंने भी यह प्रारंभ किया है, मैं उनका समर्थन-अनुमोदन करता हूँ कि व्यवस्था बड़ी सुंदर की है। धर्माराधना का अच्छा क्रम है।

श्रावक-श्राविकाओं में भी कितना आकर्षण एक पर्युषण के प्रति देखने को मिलता है। इतनी तपस्या की साधना होती है। नौवाँ दिन तो फिर प्रेक्टिकल रूप में खमतखामणा का उपक्रम भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमारे यहाँ सात दिनों के अलग-अलग विषय भी हैं।

पर्युषण के दिनों में हमारा प्रवचन भी कुछ विशेष होता है। इसमें हम भगवान महावीर का भी कुछ श्रद्धार्पण का प्रयास करते हैं। हमारे धर्मसंघ में भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन भी कई वर्षों से होता है। परमपूज्य गुरुओं की कृपा से भगवान महावीर के बारे में कुछ बताने का मुझे कई वर्षों से अवसर मिलता रहा है।

जैन दर्शन में आत्मवाद का सिद्धांत सम्मत है। अध्यात्म का एक आधारभूत सिद्धांत आत्मवाद है। आत्मवाद न हो तो अध्यात्म का, साधना का मूल्य कम हो जाता है। हम आत्मवाद के बारे में कुछ तार्किक वर्गणा कर सकते हैं। मति-श्रुत ज्ञान के आधार पर हम ज्ञानाराधना कर सकते हैं।

आत्मवाद में आत्मा एक ऐसा तत्त्व है जो शाश्वत है। आत्मा के कभी आत्मा संतान के रूप में पैदा नहीं होती। सब अपनी-अपनी स्वतंत्र आत्माएँ हैं। यह आत्मवाद का सिद्धांत है। अनंत-अनंत आत्माएँ संसार में हैं। एक भी आत्मा न बढ़ती है, न घटती है। आत्मा कभी मरती नहीं है। इस रूप में आत्मा है, तब पूर्वजन्म, पुनर्जन्म की बात सिद्ध हो सकती है। पर्याय रूप में परिवर्तन हो सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

कृत दोषों की आलोचना शुद्ध मन से करनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३ सितंबर, २०२१

अध्यात्म के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु से प्रतिसेवणा हो जाती है, दोष समाचरण हो जाता है, फिर उसकी शुद्धि का उपाय है–आलोचना करना।

आलोचना के भी दस दोष बताए गए हैं। ठीक विधि से आलोचना नहीं होती है, तो वह आलोचना का दोष होता है। उनमें पहला दोष है कि आचार्य की इस दृष्टि से विशेष सेवा आदि करना, ताकि वे मृदुतापूर्ण प्रायश्चित दे। दंड कम दे। दूसरा दोष है–अनुमान्य। आलोचना करना है, साथ में यह कह देना कि आचार्यप्रवर मैं बड़ा दुर्बल हूँ। मुझे हल्का ही प्रायश्चित देना, यों मुँह से कहते रहना। ये भी दोष है।

तीसरा दोष है–जो दोष आचार्य आदि ने देख-जान लिया है, उस दोष की तो आलोचना कर लेना, बाकि जिस दोष के बारे में आचार्य को पता नहीं है, उसको छिपा लेना। उसकी आलोचना नहीं करना। चौथा आलोचना का दोष-बाधक। केवल बड़े-बड़े दोषों को तो बता देना बाकि छोटी-छोटी बातों को छिपा लेना।

पाँचवाँ दोष है–सूक्ष्म। केवल छोटे दोषों की आलोचना करना, बड़े दोषों को छिपा लेना। छठा दोष है–छन्न। थोड़ा गुप्त रूप में करना। इतना धीरे बोला कि दोष को आचार्यजी सुन ही ना पाएँ। बात को छिपा लेना। सातवाँ–शब्दाकु। जोर-जोर से बोल देना या जहाँ शोरगुल हो वहाँ बोल देना।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *सम्यक्त्व की प्राप्ति बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। दुनिया में अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं, किंतु सम्यक्त्व के समान दूसरा कोई रत्न नहीं होता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

संसार में नित्यता और अनित्यता दोनों विद्यमान हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३१ अगस्त, २०२१

अध्यात्मवेत्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में नित्यानित्य का क्रम चलता है। दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। ध्रोव्य है, तो उत्पाद और व्यय भी है। दुनिया में सब कुछ स्थिर हो जाता है तो दुनिया फिर अलग ढंग की हो जाती है। दुनिया में सब कुछ अस्थिर हो जाता है तो भी दुनिया कोई अलग ढंग की हो सकती है।

परंतु हमारी दुनिया में स्थायित्व भी है और अस्थायी चीजें भी चलती हैं। स्थायित्व के बिना अस्थायित्व नहीं और अस्थायी की युक्तता के बिना स्थायित्व भी नहीं। द्रव्य कभी पर्याय से रहित नहीं हो सकता और पर्याय है, वह द्रव्य के आश्रय के बिना नहीं हो सकता। स्थिरता के बिना परिवर्तनशीलता नहीं।

परिवर्तन और स्थिरता दोनों का अपना महत्त्व है। सृष्टि की ऐसी व्यवस्था है कि धर्मास्तिकाय भी है और अधर्मास्तिकाय भी। परिवर्तनशीलता के लिए एक शब्द है—परिणाम, एक स्थिति से दूसरी स्थिति में चला जाना। यह परिणमन जीव में भी होता है और अजीव में भी होता है।

जैन दर्शन में भाव की बात आती है। भावा-स्वरूपं जीवस्थ। भाव जीव का स्वरूप है। इन भावों से परिवर्तनशीलता भी आती है। कर्मों के उदय से जीव में परिणामांतर हो जाता है। शास्त्रकार ने जीव परिणाम के दस प्रकार बताए हैं।

पहला है—गतिपरिणाम जीव अलग-अलग गतियों में जा सकता है। चार गति हैं। अव्यवहार राशि के जीवों का परिणामांतर कम हो रहा है। एक गति में भी जन्म-मरण का चक्र चलता है। दूसरा—इंद्रिय परिणाम। अलग-अलग इंद्रियों वाले जीव संसार में हैं। पाँच इंद्रियाँ हैं। मनुष्य संज्ञी-असंज्ञी होते हैं। केवलज्ञानी नो-संज्ञी-नो असंज्ञी होते हैं। केवलज्ञानी में द्रव्य इंद्रियाँ तो हैं, पर भाव इंद्रियाँ नहीं। भाव इंद्रियाँ क्षयोपशम भाव है। केवली तो क्षयोपशम भाव से ऊपर उठ गया। चारों घाती कर्म खत्म हो गए।

संज्ञीत्व भी छोटी चीज है, वो तो क्षयोपशम भाव है। क्षायिक भाव संज्ञीत्व से ऊपर की भूमिका हो गया। इसलिए नो संज्ञी-नो असंज्ञी। तीसरा कषाय परिणाम। अवीतराग है, उनमें कषाय भी है। चार कषाय हैं। कषाय परिणमन मन में तो होता रहता है। लेश्या परिणाम भी जीव में होता है। साधु बन जाने के बाद भी भगवान महावीर में छः लेश्या थी। चौदहवाँ गुणस्थान अलेश्यी है। पाँचवाँ है—योग परिणाम। लेश्या और योग की सहचरता है।

छठी—उपयोग परिणाम। उपयोग तो जीव का लक्षण है। सिद्धों में भी उपयोग है। उपयोग में भी स्थिरता नहीं। आकार-साकार उपयोग चलता रहता है। ज्ञान परिणाम, दर्शन परिणाम भी जीव में भी होते हैं। चारित्र का परिणाम भी आता है। केवली नौवें गुणस्थान में ही अवेदी बन जाता है।

ये परिणाम जीवाश्रित है। ये जो परिणाम है, कई तो आदरणीय है, जैसे चारित्र परिणाम, सम्यक् दर्शन परिणमन, केवल ज्ञान, केवल दर्शन के रूप में ज्ञान और दर्शन बढ़िया उपयोग अच्छा है, शुभ योग है, वो भी ठीक है। बाकी परिणाम हेय हैं, त्याज्य हैं। लेश्या और शुभ योग से छोड़े बिना मुक्ति नहीं मिलेगी। अस्विर जाकर इंद्रियों की स्थिति से भी ऊपर उठना पड़ेगा। केवलज्ञान सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है। चार ज्ञान क्षयोपशम भाव है। ज्यादा बढ़िया चीज दिखाई दे तो कम बढ़िया चीज छोड़ने लायक है।

वर्तमान जीवन के संदर्भ में देखें तो चारित्र परिणाम बढ़िया है। यह और उन्नत होता रहे। क्षयोपशम सम्यक्त्व से क्षायिक सम्यक्त्व की ओर बढ़ें। ज्ञान हमारा और ज्यादा विकसित करने का प्रयास करें। इन दस परिणामों में ग्राह्य का ग्रहण और त्याज्य का त्याग करें। यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने माणक-महिमा का विवेचन करते हुए फरमाया कि अब एक ही अपेक्षा है कि संघ को आचार्य कैसे मिले। प्रयास चल रहा है। मुनि कालूजी रेलमगरा वरिष्ठ मुनि थे। उन्होंने घोषणा की कि अपने सातवें आचार्य मुनि डालचंद जी हैं। सबके मन में खुशियाँ छा जाती हैं। अच्छा माहौल हो जाता है। संघ सनाथ हो गया। प्रकृति को जो मंजूर होता है, वही होता है। माणक महिमा अच्छा व्याख्यान है। माणक गणी के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती रहे।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। उपासक सुरेश बोरदिया ने २५ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि सम्यक् दृष्टि या सम्यक् दर्शन जिसे प्राप्त होता है, वह मोक्ष पाने का अधिकारी हो सकता है। सम्यक्त्व के दूषणों के बारे में समझाया। जब व्यक्ति की गुरु के प्रति असीम श्रद्धा होती है, वह श्रद्धा हमारी बहुत सारी समस्याओं का समाधान दे देती है, बीमारियों से मुक्त कर देती है।

साध्वी चारित्रयशा जी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। साध्वी युगप्रभा जी ने भी सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में चंद्रा बाबेल, दर्श चोरड़िया, सुरेश बोरदिया ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि एक अगस्त से शुरू नमस्कार मंत्र का सवा कोटि जप सवाया पूरा हो रहा है।

मोक्ष मार्ग की विशेष आराधना का पर्व है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी के प्रस्तुत भरत क्षेत्र में चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर हुए हैं। आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में विराजमान थे। वे महावीर एक भव में ही नहीं बनें, पृष्ठभूमि में उनकी कितनी तपः साधना आराधना रही है।

आत्मा है, आत्मवाद है, तो आत्मवाद से जुड़ा हुआ है, कर्मवाद। जो जैन दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, जो आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है। आदमी के व्यक्तित्व की व्याख्या आठ कर्मों के आधार पर की जा सकती है। तीसरा सिद्धांत है—लोकवाद। क्रियावाद की बात भी आती है। जैन दर्शन मनन और मीमांसा, भगवती, पन्नवणा और तत्त्वार्थ सूत्र को विस्तार व्याख्यान से पढ़ लें तो जैन दर्शन का अच्छा ज्ञान हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने परमपूज्य जयाचार्य के महाप्रयाण दिवस पर फरमाया कि जयाचार्य तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट आचार्य हुए हैं। तेरापंथ की प्रथम शताब्दी में आचार्य भिक्षु, द्वितीय शताब्दी में श्रीमद्जयाचार्य और तृतीय शताब्दी में आचार्य तुलसी को मुख्य रूप से देख सकते हैं। जयाचार्य ने धर्मसंघ को कई नए अवदान दिए हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में हित-मित और सात्त्विक भोजन करने के रूप में खाद्य संयम दिवस पर विशेष प्रेरणा दी। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जो व्यक्ति गहराई में जाता है वही कुछ पाने के योग्य होता है। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कार्यक्रम में मीना गोखरू ने ६, ऋतु चौरड़िया ने १५, जसोदा देवी चोपड़ा ने ४५ सहित अनेक तपस्यिों ने प्रत्याख्यान किए।

कृत दोषों की आलोचना शुद्ध मन से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आठवाँ दोष है—बहुजन। एक के पास आलोचना कर फिर उसकी दूसरे के पास आलोचना करना। नौवाँ है—अव्यक्त। जो अधिकृत है, उनके पास आलोचना करो, हर किसी के पास नहीं। दसवाँ प्रकार है—तत् सेवी। प्रायश्चित देने वाले अनेक व्यक्ति हैं। ऐसे व्यक्ति के पास जाऊँ, जो गलती मैंने की है, वो उन्होंने भी की है। फिर वे शर्मिंदा होकर मुझे थोड़े में ही कम प्रायश्चित देंगे। ये दस आलोचना के दोष हैं। इनसे आलोचना बढ़िया तरीके से नहीं होती।

साधु से गलती हो सकती है। चलने वाले से गिरने की स्थिति उसमें आ सकती है। चलेगा ही नहीं तो गिरेगा कैसे। चलो, सावधानी का प्रयास करो। चलोगे तो मंजिल निकट आएगी। गिरे हुए को संभालना बड़ी बात है। गिरने के बाद ठीक हो जाना भी अच्छी बात है। गिर गए, संभल गए तो थोड़ा नुकसान हुआ, पर आगे का जीवन तो अच्छा रह सकता है। सुबह का भूला, शाम को भी घर आ जाए तो भी ठीक है। बढ़िया तो है, आदमी गिरे ही नहीं।

यह साधु जीवन है, अंतिम श्वास अच्छी साधना में आ जाए, बढ़िया बात है। अखंड कपड़ा बढ़िया है, कोई फट गया है, तो टाँका लगाकर जोड़ लो। साधु जीवन की इस प्रकार सुरक्षा रहे। जो गलतियाँ, प्रमाद, प्रतिसेवणा हो जाए, इन दस दोषों से बचकर के साधु को अपने अधिकृत प्रायश्चित दाता के पास सरल हृदय से आलोचना करनी चाहिए ताकि अच्छी शुद्धि होने की संभावना बन सकती है।

कल से पर्युषण पर्व का प्रारंभ होने जा रहा है। यह प्रतिष्ठित धर्माराधना का समय है। गुरुकुलवास में इसकी महाशिविर के रूप में आयोजना होती है। इसको पर्वाधिराज कहा गया है। मोक्ष मार्ग की विशेष आराधना का पर्व, मन की ग्रंथियों को खोलने का पर्व है। प्रवचन कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी फरमायी। तपस्या की प्रेरणा दी।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वी हेमलता जी एवं साध्वी अर्चनाश्री जी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँची। पूज्यप्रवर ने उन्हें प्रेरणा प्रदान करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने सम्यक्त्व को सुरक्षित रखने के उपायों के बारे में बताया। साध्वीवर्या जी ने कहा कि आत्मा को कोई परमात्मा नहीं बना सकता स्वयं प्रयास करना पड़ता है।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने तपस्या के बारे में जानकारी दी। साध्वी हेमलता जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी चारूलता जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

महामंत्री निर्मल गोखरू ने जप के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हम राग-द्वेष से मुक्त आत्मा के परिणमन में रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १ सितंबर, २०२१

अध्यात्म साधना के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में दो ही तत्त्व हैं–जीव और अजीव। जो कुछ हैं, इस दुनिया में वह सब कुछ इन दो तत्त्वों में समाविष्ट हो जाता है। जीव में भी परिणमन-अवस्थांतरण होता है और अजीव में भी परिणमन होता है।

चार भाव औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक ये तो वैसे जीव से संबंध हैं। परंतु पारिणामिक भाव यानी परिणमन वह जीव और अजीव दोनों से संबंध होता है। अजीव परिणाम के दस प्रकार बताए गए हैं। अजीवों में भी बंधन होता है। परमाणु-परमाणु मिल जाते हैं, स्कंध रूप में परिणमन हो जाता है। बंधन होता है, तो इसके विपरीत भेद भी होता है। पदार्थ में टूटन भी होती है।

गति का परिणमन भी होता है। पुद्गल गति भी करता है। अस्पृश गति भी करता है। संस्थान परिणमन-पुद्गलों में भी संस्थान होता है। कोई गोल है, कोई चौड़ा-संकरा है। वर्ण परिणमन, रस परिणमन, गंध परिणमन और स्पर्श परिणमन भी होता है। ये चार परिणमन पुद्गल में अनिवार्य रूप में होते हैं। अगुरुलघु और शब्द परिणमन भी होता है। ये दस परिणमन पुद्गल में प्रतीक हो रहे हैं।

वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के बिना पुद्गल नहीं होता। परमाणु में भी ये अवश्य होते हैं। शब्द का होना जरूरी नहीं है। ये परिणमन अजीवों में होते हैं। अतीन्द्रिय ज्ञानी तो जानते ही हैं। जो अतीन्द्रिय ज्ञानी नहीं हैं, वो भी गहरी बातें जान लेते हैं। अध्यात्म और विज्ञान का संयोग है। पर एक आसन पर दोनों को बिठाना ठीक नहीं है। दोनों का उद्देश्य अलग है।

भगवान महावीर तो वैज्ञानिक नहीं सर्वज्ञानी थे। वे तो सर्वज्ञ थे। ज्ञान-ज्ञान का भी स्तर होता है। अध्यात्म और विज्ञान की समानता को जानें तो असमानता को भी जानें। आत्मा और पुद्गल में समानता भी है, पर सबसे बड़ी असमानता चैतन्य की है।

विभिन्न धर्म आज दुनिया में है, उनमें कई बातों में समानता मिल सकती है, पर असमानता भी मिल सकती है। दोनों को हम जान लें। जो जैसा है, वैसा जानने का प्रयास करें तो हम ठीक पथ पर रह सकते हैं।

हमारे जो आगम हैं, इनमें इतनी बातें हैं। कितने प्रकार के निर्देश-सूत्र हैं। कितने प्रकार के विषय हमें आगमों में प्राप्त हो जाते हैं। धर्मास्तिकाय व अधर्मास्तिकाय है, उनमें भी अपने स्तर का परिणमन हो सकता है। यों अरूपी में भी अपने ढंग का परिणमन प्रतीत हो रहा है।

हमें यह ध्यान देना है कि ये पुद्गलों में विभिन्न प्रकार के परिणमन होते हैं। हम उन परिणमनों में कैसे अपने भाव में रह सकें। पुद्गलों के परिणमन हमारे राग-द्वेष के निमित्त न बन जाएँ। हमारा राग-द्वेष मुक्ति का भाव रहे। हम आत्मा के परिणमन में रहें। हम राग-द्वेष से मुक्त रह सकें यह चिंतन का भाव हमारे लिए ग्रहणीय हो सकता है।

आज से चार दिन बाद भाद्रव कृष्णा द्वादशी है, पर्युषण का प्रारंभ होना है। पर्युषण के दिवस हमारे श्वेतांबर जैन परंपरा में बहुत महत्त्वपूर्ण दिवस होते हैं। अष्टाह्निक यह साधना है। संवत्सरी का विशेष विधान है। गृहस्थों के लिए भी यह पर्युषण का समय बहुत महत्त्वपूर्ण है।

गुरुकुल में तो पर्युषण एक विशिष्ट महाशिविर जैसा होता है। पर्युषण में गृहस्थों में अखंड जप भी चलता है। प्रवचन-श्रवण के साथ सामुहिक प्रतिक्रमण भी हो। संवत्सरी को तो उपवास के साथ पौषध भी करना होता है। समय-समय पर यथासंभव जानकारी बताई जा सकेगी।

पूज्यप्रवर ने तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि अदर्शनी होता है, जिसे सम्यक् दर्शन नहीं प्राप्त होता है। उसका ज्ञान भी सम्यक् नहीं होता। चारित्र भी प्राप्त नहीं होता। जो गुणों से रहित व्यक्ति है, वह मोक्ष को, निर्वाण को प्राप्त नहीं होता। हम हमारे सम्यक्त्व को दूषित न करें। हमारी देव, गुरु और धर्म के प्रति अटूट आस्था और समर्पण का भाव हो।

साध्वी सुषमा कुमारी जी ने बहनों को नवरंगी तप, जो ३ तारीख से शुरू हो रहा है, उससे जुड़ने की प्रेरणा दी। साध्वी मननयशा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

हस्तीमल हिरण जो आरएसएस से जुड़े हुए हैं, अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केंद्र ट्रस्ट जिन्होंने 'संकल्प' पुस्तक तैयार की है, सुरेश दक ने श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

पूज्यप्रवर ने इस विषय में फरमाया कि २०१६ का चतुर्मास बैंगलोर में हमने वहाँ किया था। वहाँ अच्छी आध्यात्मिक-धार्मिक गतिविधियाँ चलती रहें। ऐसा प्रयास रहे। मुनि मुकुल कुमार जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

नरेंद्र रांका, सहमंत्री किशोर मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सभी को यथायोग्य सेवा करने का प्रयास करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३० अगस्त, २०२१

जन-जन को आर्षवाणी का आलोक बाँटने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने वैयावृत्य पर प्रकाश डाला है। वैयावृत्य का अर्थ है–सेवा करना। सेवा करना या उपकार के लिए कार्य करना वैयावृत्य हो जाता है।

जो सैव्य है, उनकी सेवा करनी चाहिए। सैव्य के आधार पर वैयावृत्य के दस प्रकार हो जाते हैं–(१) आचार्य का वैयावृत्य, (२) उपाध्याय का वैयावृत्य, (३) स्थविर का वैयावृत्य, (४) तपस्वी का वैयावृत्य, (५) ग्लान का वैयावृत्य, (६) शैक्ष का वैयावृत्य, (७) कुल का वैयावृत्य, (८) गण का वैयावृत्य, (९) संघ का वैयावृत्य, (१०) साधर्मिक का वैयावृत्य।

साधु संस्था में विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व हो सकते हैं। सेवा बीमार की भी की जाती है। कोई बीमार नहीं है, उसकी भी सेवा करनी अपेक्षित हो सकती है। तरुणावस्था में आचार्य है, तो भी वे वैयावृत्य के अधिकारी हो सकते हैं। सेवा लेने के अधिकारी हो सकते हैं। उनके प्रति वैयावृत्य स्तुत्य है। सम्मान का भाव है।

आचार्य के आहार की व्यवस्था हो जाए और भी जो आवश्यक हो उसकी व्यवस्था की जाए। उपाध्याय का भी वैयावृत्य हो जाए तो ज्ञान-ध्यान में अच्छा समय निकाल सकते हैं। तेरापंथ के इतिहास में वैसे किसी साधु को उपाध्याय का पद नहीं दिया गया है। हमारे संघ में आचार्य में ही उपाध्यात्व समाविष्ट हो जाता है। उपाध्याय का कार्य है, अध्यापन कराना, ज्ञान देना।

स्थविर है, तपस्वी है, ग्लान है, उनका भी वैयावृत्य हो। उनकी सेवा की जाए, अच्छी बात है। आदमी स्वावलंबी रहे तो अच्छी बात है। छोटे साधु-साध्वी उनको भी सेवा-संभाल मिले। इसी तरह बाकी को भी जब-जब अपेक्षा हो उपयोगी सेवा मिले। पदस्थों की सेवा होती रहे। इससे संघ का व्यवस्थापन अच्छा रहता है। कोई असहाय महसूस न करे। वैयावृत्य कर्ता है, उसके तीर्थंकर नाम गौत्र का बंध भी हो जाए।

सेवा करने में बड़ा लाभ होता है। सेवा से मेवा मिलता है। सेवा करो, सफल बनो। सेवा करो, लाभ कमाओ। हम प्रेरणा लेते रहें, हमारे में सेवा की भावना बनी रहे, हम यथायोग्य सेवा करने का प्रयास करते रहें, यह काम्य है।

माणक महिमा की व्याख्या करते हुए फरमाया कि अंतरिम काल शुरू हो गया है। मुनि मगनलाल जी और मुनि कालू जी (छापर) ने अंतरिम व्यवस्था का भार झेल लिया। दीक्षा वृद्ध साधु को आलोयणा आदि का भार दे दिया गया। चतुर्मास पूर्ण हो रहा है। लाडनूं पधार जाते हैं। वहीं बहिर्विहारी संत वहाँ एकत्रित हो रहे हैं। मुनि कालूजी रेलमगरा को आगे की व्यवस्था का निर्णय सौंप दिया गया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'आर्षवाणी का आलोक' श्रीचरणों में अर्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हम आगम को आर्षवाणी के रूप में स्वीकार कर लें। आगमों में अनेक सूक्त हैं। जैसे आत्मा का दमन करने वाला सुखी होता है, इस लोक में भी और परलोक में भी। डॉ० साध्वी सरलयशा जी स्वाध्याय के द्वारा जितना आगम सिंधु में निम्मज्जन करने का प्रयास करें। सेवा की भावना रहे। अच्छी साधना चले, खूब प्रगति करे। पुस्तक प्रेरणादायी बने।

जैन विश्व भारती द्वारा जैन विद्या परीक्षा के बैनर का अनावरण श्रीचरणों में किया गया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जो साधक लाघवता की साधना करता है, वह व्यक्ति हर पल आनंद का अनुभव करता है। जो साधक सम्यक् दर्शन की साधना करता है, सम्यक् दर्शन को अपने जीवन में पुष्ट बना लेता है, वह भी आनंद की अनुभूति कर लेता है। उसका दृष्टिकोण-सोच सही बन जाती है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है। हमें कैसा जीवन जीना है, परतंत्र या स्वतंत्र। स्वतंत्र जीवन जीने के लिए जरूरी है, प्रतिक्रिया-विरति की साधना।

डॉ० साध्वी सरलयशा जी ने अपनी पुस्तक के लोकार्पण पर अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पुखराज बड़ौला ने जैन विद्या परीक्षा के बारे में जानकारी दी। भीलवाड़ा के कवि योगेंद्र शर्मा ने सुमधुर कविता का संगान किया। अभिषेक चौधरी एनएसयू ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। वे अशोक गहलोत मुख्यमंत्री राजस्थान के स्वास्थ्य की कामना हेतु पूज्यप्रवर का मंगलपाठ सुनने आए थे।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से हमारा संबंध भी है। चित्त समाधि बनी रहे। इसके निमित्त मंगलपाठ प्रदान करवाया। पूज्यप्रवर ने आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

कवि-लेखक नरेश शांडिल्य, राजेश चेतन ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतर आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विनय है आदर्श व्यक्तित्व की पहचान

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कन्याओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंडल की अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़ ने कन्याओं का प्रोत्साहन बढ़ाया।

साध्वी चेलनाश्री जी ने गीतिका के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी उदितप्रभा जी ने कहा कि कन्या ही समाज का भविष्य है। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने कहा कि व्यक्तित्व की पहचान है शालीनता। साध्वी मंजूरेखा ने कहा कि अंतर जागृति का नाम ही है विनय।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा विनीत कन्या हमेशा हर मोड़ पर सफल होती है। राजाजीनगर महिला मंडल उपाध्यक्ष उषा चौधरी ने कन्याओं को बधाई दी। युवक परिषद से गुलाब बांठिया ने कन्या मंडल और महिला मंडल के काम के प्रति जोश की तारीफ की। सभा मंत्री विक्रम मेहर, कमल दुगड़, सहमंत्री हेमलता सुराना, कार्यकारिणी सदस्य चित्रा बाफना उपस्थित थीं। कन्या मंडल की संयोजिका प्रेक्षा सुराणा ने संचालन किया। सह-संयोजिका आर्य संचेती ने सभी कन्याओं का धन्यवाद किया।

क्षेत्रीय महिला सेमिनार

उधना।

मुनि सुव्रत कुमार जी के सान्निध्य में महिला मंडल द्वारा क्षेत्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय था–'कोविड के चलते चतुर्मास को कैसे करें सफल' मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र व मंडल की बहनों के मंगलाचरण से सेमिनार की शुरुआत की। सभी का स्वागत-अभिनंदन अध्यक्ष जसु बाफना ने किया। मुनिश्री ने बताया कि नरक में अनेक बीमारियाँ हैं, यहाँ तो कुछ भी नहीं हैं, हमें बीमारी के साथ मैत्री भाव रखना चाहिए। जहाँ शरीर है वहाँ रोग है। हमें मनोबल आत्मबल से सामना करना चाहिए। गीतिका का संगान किया। उपासिका सीमा डांगी ने कहानी के माध्यम से धर्म में कैसे बने रहें, बताया। उपाध्यक्ष सोनू बाफना व मंजु नौलखा ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

महिला मंडल के विविध आयोजन

प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में ज्ञानवर्धक प्रश्न प्रतियोगिता आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिता समय-समय पर होनी चाहिए, जिससे स्वाध्याय करने की प्रेरणा मिलती रहे।

महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने सभी बहनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। प्रश्न पत्र की संयोजिका ममता मांडोत का पूरा सहयोग रहा। एबीटीएमएम की पूर्व महामंत्री वीणा बैद, उपाध्यक्ष महिमा पटावरी, उपाध्यक्ष मंजु गादिया, मंत्री सुमित्रा बरड़िया, प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा आदि बहनों ने सभी बहनों को सम्मानित किया। प्रथम स्थान बरखा पुगलिया, दूसरे स्थान पर अंजु सेठिया तथा तीसरे स्थान पर किरण बाई रही।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

सूरत।

तेममं के निर्देशन में सूरत कन्या मंडल ने प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग ४० से अधिक कन्याओं ने भाग लिया। पर्वत पाटिया और उधना क्षेत्र की कन्या मंडल ने भी भाग लिया। साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में आराधनाश्री जी ने सभी कन्याओं को तत्त्वज्ञान के द्वारा मार्गदर्शन दिया।

पर्वत पाटिया कन्या मंडल की कन्याओं ने मंगलाचरण से कार्यशाला की शुरुआत की। गौतम गादिया ने प्रेक्षाध्यान का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने प्रेक्षाध्यान की पाँच उपसंपदा के बारे में बताया।

रेणु बैद ने मेडिटेशन के लाभ और ट्रिक्स बताए जो हमें हमारी लाइफ में बहुत सहयोगी होंगे। निल्पा पारीख ने स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज करवाई, जिससे शरीर रिलैक्स हो। श्वेता रामपुरिया ने स्ट्रेस को मैनेज कैसे करें, के तरीके बताए। अलका सांखला ने कन्या मंडल की कन्याओं को काफी मोटिवेट किया और मेडिटेशन क्यों करना चाहिए इसके बारे में बताया।

उधना कन्या मंडल की संयोजिका उन्नति बाफना ने आभार ज्ञापन किया। अंत में कन्या मंडल प्रभारी शिल्पा मादरेचा ने सभी ट्रेनर्स का सम्मान किया तथा कार्यशाला में सभी ने आनंद लिया।

यह कार्यशाला तीनों क्षेत्र की कन्या मंडल के सहयोग से सफल रही। कार्यशाला का संचालन सूरत कन्या मंडल की प्रीति जैन ने किया।

२५ बोल प्रतियोगिता

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में २५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी द्वारा प्रश्न-उत्तर पूछे गए। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। प्रतिभागियों के १० ग्रुप बनाए गए। ग्रुप के नाम तेरापंथ आचार्यों के नाम पर रखे गए।

कार्यक्रम में प्रथम स्थान भिक्षु ग्रुप की भारती सुराणा, रेणु बैंगानी, द्वितीय स्थान रायचंद ग्रुप की लविशा जैन, जतन बोकड़िया, तीसरा स्थान महाप्रज्ञ जी ग्रुप के कुशाल भंसाली एवं प्रेम सुराणा का रहा।

महिला मंडल की अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया और जीतने वाली टीम को बधाई एवं सम्मानित किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा, उपाध्यक्ष सरला मेहता, कार्यसमिति सदस्य प्रेम सुराणा, सुशीला मोदी, अंजू गोलछा, सीमा नाहर, सुमन दुगड़, मंजू दुगड़, प्रीति नाहटा, ज्योति भूतोड़िया आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की संयोजिका कविता आच्छा, निशा दुगड़, जूली बैद द्वारा कार्यक्रम का संयोजन व्यवस्थित रहा। मंत्री श्वेता सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगरम्।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा आयोजित वर्तमान शिक्षा प्रणाली सही या गलत विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि वास्तव में वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में बहुत कमी हैं। जीवनलक्ष्यी नहीं अर्थोपार्जन शिक्षा बनकर रह गई है। शिक्षा ग्रहण करने के साथ जीवन में परिवर्तन आना जरूरी है। हमारी सोच की शैली, व्यवहार, आचरण उच्च शिक्षा के साथ उच्च बनना चाहिए। मुनि प्रशांत कुमार जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबंध में पक्ष-विपक्ष ने विचार व्यक्त किए। शिक्षा हमारे जीवन के लिए आवश्यक है आगे भी इसकी महत्ता बनी रहेगी। शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव जीवन का समग्रता से विकास होना है।

कार्यक्रम का शुभारंभ नेहा बैद व विनीता बैद के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री कमला हीरावत ने विचारों की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल संयोजिका हर्षा नाहटा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। आभार प्रस्तुति प्रेरणा आंचलिया ने दी। प्रतिभागियों को तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सम्मानित किया गया।

कनक कला कौशल प्रतियोगिता

विजयनगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं ने तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के जीवन के पहलुओं को दर्शाते हुए एक पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि असीम प्रतिभाओं की धनी और अपार रश्मियों की बहुलता लिए हुए साध्वीप्रमुखाश्री जी ने नारी उन्नयन हेतु सतत प्रयत्नशील रहते हुए नारी को समाज में अग्रणी स्थान प्रदान कराने का महान कार्य किया है।

तेममं अध्यक्ष प्रेम भंसाली व मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने साध्वीश्री जी के प्रति अपनी मंगलभावना व्यक्त की। कार्यक्रम की संयोजिका मधु कटारिया ने सभी बहनों को प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिता में अच्छी संख्या में बहनों व कन्याओं ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर मुस्कान घोषल एवं दूसरे स्थान पर सपना मांडोत रही।

सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह

चिकमंगलूर।

तेयुप, तेममं एवं अणुव्रत समिति के चिकमंगलूर शाखाओं के नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। जैन संस्कारक महावीर सकलेचा और सहयोगी राकेश कावड़िया के सहयोग से तीनों संस्थाओं का विधिपूर्वक एवं मंत्रोच्चार से शपथ ग्रहण संपादित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन महासभा के कार्यकारिणी सदस्य पुष्पराज गादिया ने किया। विजय गीत, अणुव्रत गीत एवं जागो बहनों का संगान भी कार्यक्रम में किया गया।

तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष महावीर संकलेचा ने सभी का स्वागत किया एवं निर्वाचित अध्यक्ष नितेश गादिया को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। अपनी टीम की घोषणा करते हुए नूतन अध्यक्ष ने अपने पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई।

महिला मंडल के निवर्तमान अध्यक्ष चंद्राबाई गादिया, निर्वाचित अध्यक्षा संगीता गादिया, टीपीएफ के अध्यक्ष अशोक गादिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष लालचंद भंसाली, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष राहुल गादिया, नवीन गादिया, प्रवीण डोसी ने निवर्तमान अध्यक्ष महावीर संकलेचा के कार्यकाल के कार्यों पर बधाई दी एवं नए अध्यक्ष नितेश गादिया की टीम को शुभकामनाएँ दी।

तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष मदनचंद गादिया ने अणुव्रत समिति अध्यक्ष लालचंद भंसाली को अपने दूसरे कार्यकाल की शपथ ग्रहण दिलाई। लालचंद ने अपनी टीम की घोषणा कर सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई।

महिला मंडल के निवर्तमान अध्यक्ष चंद्राबाई गादिया ने निर्वाचित अध्यक्षा संगीता गादिया को अध्यक्ष पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के निवर्तमान मंत्री राकेश कावड़िया ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

✦ *संपूर्ण कर्मों का क्षय होने से आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होती है, उसका नाम मोक्ष है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु भजन संध्या का आयोजन

दिल्ली।

तेरापंथी सभा, दिल्ली सभा व दक्षिण दिल्ली सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में मासिक तेरस के अवसर पर भिक्षु भजन संध्या का आयोजन गोयल श्रद्धा निवास, ग्रीन पार्क में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुरेश जैन ने नमस्कार महामंत्र से किया। भिक्षु अष्टकम भाई-बहन की जोड़ी विधि-विधान ने बांसुरी वादन के साथ किया। दक्षिण दिल्ली सभाध्यक्ष संजय चोरड़िया ने सभी का स्वागत किया।

रजनी बाफना, रश्मि भूरा, जया बोथरा, हीरालाल गेलड़ा, सुरेश जैन, पुलकित खटेड़, विमल गुनेचा, संजय भटेरा, ललित श्यामसुखा, विमल बैंगानी ने सुमधुर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की संपन्नता शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में साध्वी कांतप्रभा जी की सुमधुर गीतिका व मंगलपाठ से हुआ। साध्वीश्री जी ने सभी को १३ मालाएँ ओम भिक्षु की फेरने की प्रेरणा दी एवं सभी ने यथाशक्ति संकल्प लिया। आभार ज्ञापन डालमचंद बैद, महामंत्री दिल्ली सभा ने किया।

कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, निर्मल कोठारी, सांस्कृतिक प्रभारी ललित श्यामसुखा, दक्षिण दिल्ली उपाध्यक्ष प्रदीप खटेड़, कोषाध्यक्ष अशोक कोठारी, दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष उत्तम गेलड़ा, अरविंद दुगड़, दक्षिण दिल्ली ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका सुमन कोठारी एवं श्रावक-श्राविका परिवार आदि की कार्यक्रम में उपस्थिति रही। कार्यक्रम की संयोजन उपाध्यक्ष रजनी बाफना ने संचालन किया।

ज्ञानालोक से स्वयं को आलोकित करें

मदुरै।

ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान रूपी तिमिर का नाश करके ही आत्मा का अभिनव विकास कर सकते हैं। जैन विद्या कार्यशाला ज्ञान खजाना को भरने का एक विशेष उपक्रम है। इस साल परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा लिखित तीन बातें ज्ञान की पुस्तक पर आधारित यह कार्यशाला मदुरै के लिए ज्ञान जागरण हेतु विशेष उपयोगी बनी। मुनि भरत कुमार जी ने कहा कार्यशाला द्वारा पाना है ज्ञान, जिससे हम कर सकें आत्मा की पहचान।

बाल संत जयदीप कुमार जी ने ज्यादा-से-ज्यादा इस कार्यशाला में संभागी बनने की प्रेरणा दी। जैन विद्या कार्यशाला के बैनर का विमोचन मुनिश्री समक्ष तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकड़िया, उपाध्यक्ष अभिनंदन बागरेचा, मंत्री राजकुमार नाहटा द्वारा किया गया। तथा कार्यशाला की किट का वितरण भी किया गया।

कार्यशाला के लाभार्थी नरपतसिंह, धीरज कुमार दुगड़ परिवार का तेयुप की तरफ से धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

व्रत चेतना का जागरण हो

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी आदि के सान्निध्य में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला सप्तदिवसीय का शुभारंभ तेयुप के तत्त्वावधान में हुआ। साध्वीवृंद द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला बैनर अनावरण सभाध्यक्ष मनोज डाग, महिला मंडल मंत्री सीमा छाजेड़ एवं बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला संयोजक सौरभ दुगड़ के साथ किया एवं पूरी परिषद को इस कार्यशाला से जुड़ने का आह्वान किया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि जीवन का सौभाग्य है व्रतों की आराधना जो असंयम से संयम की ओर प्रस्थान है। व्रत जीवन की कसौटी है तो दुर्गति से बचने के लिए त्राण है, रक्षा कवच है। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि विषय वासनाएँ एवं कामभोगों की प्राप्ति भौतिक सामग्री में जो अनासक्त भावों से जीने का प्रयास करता है वह मानव जीवन को महान बनाता है। साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी व साध्वी चेलनाश्री जी ने परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित गीत से मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष मनोज डागा ने बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला में संभागी बनने के लिए विचार रखे।

एक पेड़-एक जिंदगी

जयपुर।

तेयुप, अणुव्रत समिति एवं दैनिक भास्कर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'एक पेड़ - एक जिंदगी' वृक्षारोपण अभियान के तहत श्रीमद् जयाचार्य स्मारक (साधना का प्रज्ञापीठ) पर पेड़-पौधे लगाए गए।

तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि दैनिक भास्कर के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम अमित कुलदीप कोटेचा (गंगा कोटेचा ग्रुप) के सौजन्य से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तेयुप के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, सहमंत्री सौरभ पटावरी, कार्यसमिति सदस्य रवि छाजेड़, पारस बैद, प्रवीण भूतोड़िया, नवीन बोकड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य हितेश भांडिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विमल गोलछा, मंत्री जयश्री सिद्धा सहित अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक अमित छल्लानी व संजीव जूनीवाल का उल्लेखनीय श्रम रहा।

प्रेक्षाध्यान, आसन एवं प्राणायाम कक्षा

शाहीबाग।

तेरापंथ भवन, ध्यान कक्ष में तेरापंथ सेवा समाज और प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान आसन एवं प्राणायाम की कक्षा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के मंगलपाठ के साथ शुरुआत हुई। साध्वी नंदिताश्री जी ने कहा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा भीतर की साधना का उत्तम उपाय है—प्रेक्षाध्यान।

मंगलाचरण प्रेक्षागीत से दिलीप कोठारी व विमल बाफना ने किया। स्वागत भाषण तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने कहा प्रेक्षाध्यान हमारे जीवन का अंग बने। यौगिक क्रया धर्मेन्द्र कोठारी व आसन धनराज छाजेड़ ने करवाए। वरिष्ठ प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने प्राणायाम का प्रयोग कराते हुए कहा प्राणायाम से प्राण शक्ति बलवान होती है। मंगलभावना उपासिका प्रेमलता कोठारी ने करवाई। आभार ज्ञापन विमल घीया ने किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक सेठिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। संयोजक व संचालन जवेरीलाल संकलेचा ने किया।

अणुव्रत जीवनशैली एवं सेवा कार्य

हावड़ा।

अणुव्रत समिति, हावड़ा द्वारा महामारी व लोक डाउन के समय बादामी देवी आश्रम हावड़ा में अणुव्रत जीवनशैली प्रचार-प्रसार एवं अनाथ आश्रम के बच्चों के बीच भोजन वितरण किया गया।

सर्वप्रथम सामुहिक नमस्कार महामंत्र का जाप किया एवं सामुहिक अणुव्रत गीतिका का संगान किया गया। तत्पश्चात सभी बच्चों को अणुव्रत आचार संहिता एवं नशामुक्ति का भी संकल्प कराया गया। अणुव्रत समिति, हावड़ा के अध्यक्ष मनोज कुमार सिंघी, कार्यक्रम के संयोजक उपाध्यक्ष-प्रथम अजीत बैद, मंत्री राजेश कुमार बोहरा, कोषाध्यक्ष डालम गीड़िया एवं प्रचार-प्रसार मंत्री राकेश धारीवाल उपस्थित थे। सभी के सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

सुजानगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी मंगतमल सुराणा के सुपौत्र व मोहनलाल सुराणा के सुपुत्र यश सुराणा के नूतन गृह पर कुंभ कलश स्थापना संस्कारक विजयकांत खटेड़ ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाई। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया।

यश के पिताजी मोहनलाल सुराणा ने व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को उपयोगी बताया। सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप की ओर से कोषाध्यक्ष अरुण कानूगा व सचेतक प्रकाश घोड़ावत ने मंगलकामना देते हुए मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

पदराड़ा निवासी राकेश चोरड़िया, तरपाल निवासी भरत बम्बोरी, संचलि निवासी कुंदन पालीवाल के संयुक्त नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया। राकेश व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी जनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

अजमेर।

मसूदा निवासी अजमेर प्रवासी संजय नाहर के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया, जिसमें तेयुप के अध्यक्ष राकेश छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष सुमति छाजेड़ व अनिल छाजेड़ ने संपूर्ण विधि मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संजय नाहर व उनके परिवार जनों ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग किए।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गंगाशहर।

रितेश बोथरा पुत्र राजेंद्र कुमार बोथरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक देवेंद्र कुमार डागा, भरत गोलछा, पीयूष लुणिया ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया। इस अवसर पर तेयुप, गंगाशहर के सदस्य राकेश चोरड़िया भी उपस्थित थे। देवेंद्र डागा ने बोथरा परिवार को बधाई प्रेषित की।

विवाह संस्कार

गंगाशहर।

बीकानेर निवासी रीता देवी गोलछा की सुपुत्री निकिता का शुभ विवाह, गगाशहर निवासी स्व० बाबूलाल सुराणा के सुपुत्र कपिल सुराणा के साथ साधुमार्ग जैन सेवा समिति, बीकानेर में संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी और भरत गोलछा व विनीत सामसुखा ने विवाह संस्कार को विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप, गंगाशहर के सहमंत्री भरत गोलछा ने गोलछा व सुराणा परिवार को बधाई प्रेषित की और वर-वधू को उज्ज्वल भविष्य हेतु आशीर्वाद प्रदान किया।

पाणिग्रहण संस्कार

रायपुर।

कांता-कांतिलाल देशलहरा भिलाई निवासी की सुपुत्री श्रेया का पाणिग्रहण संस्कार दुर्ग निवासी ममता-अनिल बरमेचा के सुपुत्र शुभम के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़ और सह-संस्कारक सूर्यप्रकाश बैद ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप, रायपुर के कार्यकारी अध्यक्ष निर्मल बैंगानी ने वर-वधू को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। तेयुप, रायपुर का आभार देशलहरा और बरमेचा परिवार ने किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, दुर्ग-भिलाई के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल, मंत्री दिलीप बरमेचा सहित तेयुप दुर्ग-भिलाई के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

शपथ ग्रहण समारोह

डी०वी० कॉलोनी।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप, हैदराबाद की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि के साथ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली ने विजय गीत के मंगलाचरण के साथ किया। तत्पश्चात जैन संस्कारक आशीष दक, राहुल गोलछा ने जैन मंत्रोच्चार से विधिवत संस्कार संपन्न करवाया गया। निवर्तमान अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा ने नवमनोनीत अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा को अध्यक्ष पद हेतु शपथ दिलाई तथा उन्हें आगामी कार्यकाल हेत शुभकामनाएँ दी। अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने अपने पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी सदस्यों का परिचय करवाया तथा उन्हें शपथ दिलाई।

साध्वीश्री जी ने नवमनोनीत अध्यक्ष एवं उनकी टीम को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आज सब जागरूकता के साथ अपने कर्तव्यों और मर्यादाओं का पालन करते हुए धर्मसंघ में नए कीर्तिमान स्थापित करें।

सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष एवं तेयुप के पूर्व अध्यक्ष अशोक बरमेचा, अभातेयुप से अभिनंदन नाहटा व मनीष पटावरी, तेमम की अध्यक्षा अनिता गीड़िया, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद तथा अणुव्रत समिति की तरफ से रीटा सुराणा, जेटीएन से मीनाक्षी सुराणा एवं तेयुप कार्यकर्ता प्रकाश दफ्तरी ने नवमनोनीत अध्यक्ष एवं नवगठित टीम को बधाई दी। कार्यक्रम में बीजेपी एमएसएमई बोड़ के सदस्य विजय सुराणा की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी संस्थाओं के नवमनोनीत अध्यक्ष का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन नवगठित टीम के मंत्री वीरेंद्र घोषल ने किया तथा सभी का आभार व्यक्त किया।

कोविड़ वैक्सीनेशन कैंप

इचलकरंजी।

तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के ८१वें जन्म दिवस पर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में कोविड वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप में कोविशील्ड वैक्सीन १८ प्लस आयु वाले सभी किशोरों को प्रथम व द्वितीय डोज दिया गया। जयसिंगपुर के सहधार्मिक भाई डॉ० राजेश बाफना, पूर्व तेयुप अध्यक्ष संदीप बरड़िया और उनकी टीम द्वारा वैक्सीन दी गई। इस कैंप से ८१ किशोर लाभान्वित हुए।

तेमम द्वारा आयोजित इस कैंप का प्रारंभ साध्वी प्रज्ञाश्री जी से मंगलपाठ सुनकर किया गया। इस कैंप के सफल आयोजन में तेरापंथी सभा, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल, सभी महिला सदस्य भवन के कर्मचारी आदि सभी का श्रम नियोजित हुआ।

कार्यक्रम की संयोजिका नीता देवी छाजेड़ व मंत्री प्रज्ञा देवी आंचलिया ने अपनी समस्त नारी शक्ति के साथ इस कैंप को सफल बनाया। कार्यक्रम के अंत में तेमम की ओर से रजनी पारख ने आभार ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला कार्यक्रम का आयोजन

जलगाँव।

तेरापंथी सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र और अर्हं की वंदना से हुई। सभा अध्यक्ष माणकचंद बैद, महिला मंडल अध्यक्षा एवं ज्ञानशाला की पूर्व संयोजिका नम्रता सेठिया, उपासिका एवं ज्ञानशाला की खान्देश स्तरीय क्षेत्रीय संयोजिका उमा सांखला, जलगाँव की पूर्व ज्ञानशाला संयोजिका एवं रायपुर ज्ञानशाला की सह-संयोजिका रश्मि देवी लुंकड़, ज्ञानशाला संयोजिका विनीता समदरिया ने ज्ञानशाला में संस्कारों का जागरण कैसे किया जाए ताकि बच्चों में सद्-संस्कारों का निर्माण हो पाए। इस विषय पर अपने भाव रखे।

पूर्व ज्ञानशाला संयोजिका नम्रता सेठिया का सम्मान किया गया। जलगाँव ज्ञानशाला की पूर्व संयोजिका एवं रायपुर की सह-संयोजिका रश्मि देवी लुंकड़ का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। ज्ञानशाला दिवस पर अनेक जनों ने अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थियों को ज्ञानशाला मौखिक परीक्षा के लिए एवं टास्क के माध्यम से धर्म आराधना करने के लिए ट्राफी व अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

आभार ज्ञापन दक्षता सांखला एवं सूत्र संचालन सह-संयोजिका मोनिका छाजेड़ और प्रशिक्षिका रितु छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरड़िया, नीरज समदरिया, प्रशिक्षिका रौनक चोरड़िया, सुषमा चोरड़िया, मैना देवी छाजेड़ और पूर्व ज्ञानार्थी महक दुगड़, आदित्य समदरिया का भरपूर सहयोग मिला। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष रितेश छाजेड़, महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष निर्मला छाजेड़ व बच्चों व अभिभावकों की अच्छी उपस्थिति रही।

प्रेक्षा साहित्य सेंटर का शुभारंभ

बैंगलोर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में प्रेक्षा साहित्य सेंटर का उद्घाटन साध्वी लावण्यश्री जी के मंगलपाठ से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा साहित्य हमारे धर्मसंघ की विशेष धरोहर है। साहित्य का अधिक से अधिक पठन हो उसके लिए आवश्यक है उसकी समय पर सार-संभाल व उपलब्धता भी हो। इस साहित्य सेंटर को सुव्यवस्थित बनाने में विनीता मालू, सुनीता सियाल का विशेष योगदान रहा।

साध्वीश्री जी ने प्रेरणा प्रदान की। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम मूथा, महासभा के राष्ट्रीय सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरणा, तेयुप बैंगलोर के सहमंत्री विवेक मरोठी ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में बोलाराम तेरापंथ भवन में साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम द्वारा मंगलाचरण से किया गया। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भावशुद्धि से ही व्यक्ति अपनी जीवनधारा को मोड़ सकता है। अणुव्रत संयम की चेतना को जागृत कर भावशुद्धि की प्रेरणा प्रदान करता है। नैतिकता, ईमानदारी और चारित्रिक शुद्धि से ही व्यक्ति अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रख सकता है।

इस अवसर पर साध्वी ज्योतियशा जी ने कहा कि श्रावन मास कर्म निर्जरा का सुंदर अवसर है। संयम चेतना जागृत करने का अवसर है। त्याग, तप में आगे बढ़ने का समय है। अणुव्रत को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कन्या मंडल से प्रेरणा निकिता योमा ने अणुव्रत शब्द चित्र के माध्यम से प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित करणसिंह बरड़िया व नीरज सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेडतवाल ने किया। इस अवसर पर जैन सेवा संघ के कोषाध्यक्ष अशोक संचेती, विनोद संचेती, तेरापंथ सभा के सहमंत्री राकेश सुराणा, जयसिंह सुराणा, तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, श्रवण कोठारी, आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मानसरोवर के गायक नवनीत छाजेड़ ने गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने धन्यवाद दिया। आगंतुक अतिथियों का अणुव्रत समिति ने साहित्य द्वारा सम्मान किया।

संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

संगीत की मधुरता, समरसता से कोई भी उदासी हो या अवसाद हो उससे पार पाया जा सकता है। संगीत ऐसी विधा है, जो आत्मा को परमात्मा की ओर बढ़ने का सेतु बनती है। यह विचार तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहे। केसरीचंद बालचंद भटेरा आजीवन रोलिंग शील्ड संगीत प्रतियोगिता में साध्वीश्री जी ने कहा कि प्रतियोगिता कर्म निर्जरा की हेतु भी बनती है। यह मंच समाज की प्रतिभाओं को निखरने में सहभागी बनता है।

संगीत प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के प्रदर्शन के आधार पर निर्णायक कन्हैयालाल पुगलिया, हेमंत डूंगरवाल, मनीषा चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए काव्य बांठिया को प्रथम, स्वरूपचंद दांती को द्वितीय एवं गरिमा आच्छा को तृतीय स्थान पर घोषित किया। तेरापंथ सभा मंत्री गजेंद्र खाटेड़, निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़, पूर्वाध्यक्ष तनसुख नाहर, तेयुप मंत्री संतोष सेठिया एवं अन्य विशिष्ट जनों से प्रतियोगियों को सम्मानित किया। प्रतियोगिता का संचालन राहुल चोपड़ा ने किया।

'संस्था के प्रति हमारा दायित्व' प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में 'संस्था के प्रति हमारा दायित्व' प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता है, कार्य का मूल्यांकन करना भी सीखना चाहिए। जिसमें जितनी योग्यता है उस हिसाब से कार्य करना, सुरक्षा और आदर्श के साथ अपनी संस्था को आगे बढ़ाना चाहिए। साध्वी दीप जी तथा साध्वी फूलकुमारी जी का उदाहरण दिया। साध्वी आस्थाश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया।

सभी का स्वागत तेमम की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने किया। सभा के अध्यक्ष राजेश चावत ने कहानी के माध्यम से बताया संगठन को कैसे जोड़ के रखा जा सकता है। निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम डांगी ने तथा तेयुप के सहमंत्री हितेश भटेवरा ने अपने विचार रखे।

अभातेमम पूर्व महामंत्री एवं मुख्य प्रशिक्षक वीणा बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष महिमा पटवारी ने प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन संस्था के प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन संस्था की मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। कार्यशाला के प्रायोजक भंवरी देवी कोठारी परिवार रहा। कार्यक्रम में सहमंत्री अंजू सेठिया, सुनीता भटेवरा, प्रचार-प्रसार मंत्री किरण बोराणा आदि बहनों का विशेष सहयोग रहा।

✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ किशोर मंडल का नवगठन

तिरुपुर।

तेरापंथ किशोर मंडल का नवगठन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के साथ हुई, जिसके उपरांत विजय गीत का संगान किया गया। निवर्तमान संयोजक एवं सह-संयोजक ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। किशोर मंडल प्रभारी जयसिंह कोठारी ने नए संयोजक के रूप में चयन श्यामसुखा एवं सह-संयोजक के रूप में ऋषभ सुराणा के नाम की घोषणा की। तेयुप के अध्यक्ष सोनू डागा एवं जयसिंह कोठारी ने नव टीम को बधाई दी।

नवीन कार्यालय का लोकार्पण

केसिंगा।

मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से स्थानीय सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन के स्वीकृति से तेरापंथ भवन में ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा का अस्थायी कार्यालय का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन के साथ प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन, उपाध्यक्ष गोविंद जैन, महामंत्री अनूप कुमार जैन, कोषाध्यक्ष सुदर्शन जैन एवं सिंधिकेला महिला मंडल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तप अभिनंदन के आयोजन

तप से शुद्धि, तप से मुक्ति

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने दूसरे मासखमण के तप अभिनंदन के कार्यक्रम में कहा कि कार्यकर्ता पवन कुमार सुराणा ने मासखमण किया है–विल्लुपुरम में संपूर्ण जैन समाज का भाईयों में प्रथम मासखमण है–पवन सुराणा ने न केवल नाम चमकाया है बल्कि अपना जीवन भी चमकाया है। तपस्या अभ्युत्थान का मार्ग है–जीवन रूपांतरण की प्रक्रिया भी है। तपस्या धीर व्यक्ति ही कर सकता है, धैर्य के साथ अगर निर्जरा का लक्ष्य होता है तो व्यकित अचिन्त्य लाभ प्राप्त कर लेता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ वलवनूर की महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। तेरापंथी सभा की ओर से प्रेम सुराणा, महिला मंडल से चंचल सेठिया, तेयुप से निखिल भंडारी ने अपने विचार रखे।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि तपस्या से केवल औदारिक शरीर ही नहीं, तैजस और कार्मण शरीर भी प्रकंपित होते हैं, तैजस शक्ति जागृत होती है। साध्वी सन्मतिप्रभा जी ने कहा कि तप के द्वारा मन में पवित्रता का, वाणी में सत्य का तथा शरीर में स्थिरता का विकास होता है।

विल्लुपुरम कन्या मंडल एवं महिला मंडल ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया, ननिहाल बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। पवन के छोटे पुत्र एवं पुत्रियों में दृश, युति, धृति ने रोचक एवं भावपूर्ण प्रस्तुति दी। ललिताबाई सुराणा ने मंगलकामना व्यक्त की। बहनें, अनु हिंगड़, वर्षा धोका ने गीत गाकर भाई का अभिनंदन किया। अभातेयुप के बारहव्रत क्षेत्रीय प्रभारी विकास सेठिया, पांडेचेरी से हेमराज कुंडलिया, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष, राजेंद्र नाहर ने अपने विचार रखे। साध्वीप्रमुखाश्री जी का संदेश वाचन महेंद्र धोका, अभिनंदन पत्र का वाचन सुरेंद्र बड़ोला, आभार ज्ञापन मंत्री राजेश सुराणा एवं कार्यक्रम का संचालन समता सुराणा ने किया।

सामूहिक तप अनुमोदना एवं सम्मान

पाली।

साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी प्रसन्नप्रभा जी, साध्वी ऋतुयशा जी की प्रेरणा से रेखा धर्मपत्नी दिनेश बांठिया के मासखमण तप और विपिन बांठिया सुपुत्र सज्जनराज बांठिया व धर्मपत्नी मधु बांठिया के सजोड़े ग्यारह के तप के उपलक्ष्य में तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें पाली तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तपस्वियों के तप की अनुमोदना की गई। तेयुप मंत्री विनोद भंसाली ने बताया कि तपस्वियों के तप के उपलक्ष्य में तेयुप, पाली द्वारा भजन गोष्ठी का भी आयोजन रखा गया, जिसमें मधुर गायक शिखरचंद चोरड़िया एवं तेयुप सदस्यों द्वारा तपस्या के भजनों की प्रस्तुति दी गई।

अध्यक्ष प्रवीण बालड़ ने बताया कि तप अभिनंदन समारोह में साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी ऋतुयशा जी ने तपस्या का महत्त्व बताते हुए तप के लिए प्रेरित किया। सभा से गुमानमल भंसाली द्वारा तपस्या पर वृत्तांत बताया गया। महिला मंडल अध्यक्षा उषा मरलेचा, तेयुप मंत्री विनोद भंसाली, प्रकाश नाहर ने तप पर विचार व्यक्त किए तथा ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा परिसंवाद व गीतिका प्रस्तुत की गई। तप अभिनंदन समारोह में समाज के कई श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। मंच संचालन मंत्री अनिल भंसाली ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

केसिंगा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में रामकली देवी जैन धर्मपत्नी सुश्रावक सुरेश जैन एवं राजेश कुमार जैन सुपुत्र श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० दिलबाग राय जैन के मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम तेरापंथ भवन परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्थानीय अध्यक्ष मंगतराम जैन की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि के रूप में ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन भी उपस्थित थे। मंगलाचरण पश्चात सभा अध्यक्ष ने सबका स्वागत किया। दोनों तपस्वियों के परिवार से अनेक भाई-बहनों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश ने भी अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

प्रांतीय सभा की ओर से अभिनंदन पत्र का वाचन ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा महामंत्री अनूप कुमार जैन ने किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने अपनी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मुनि परमानंद कुमार जी ने तपस्या को संजीवनी बूटी बताया। मुनि जिनेश कुमार जी के उद्बोधन के पश्चात स्थानीय सभा, महिला मंडल, गोचरी सेवा कार्यकर्ता, ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा द्वारा तपस्वियों को अभिनंदन पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। आसपास के अंचलों से भी काफी श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अरुण कुमार जैन ने किया। आभार ज्ञापन स्थानीय सभा मंत्री जय भगवान जैन ने किया।

मनोबल से होती है तपस्या

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में सोहनलाल रायसोनी के मासखमण तपस्या पर तप अनुमोदना का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा जैन धर्म में तपस्या का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तप के प्रभाव से मनुष्य अचिन्त्य शक्तियों और लब्धियों को प्राप्त कर लेता है। भगवान महावीर ने इसे कर्म निर्जरा का श्रेष्ठ साधन बताया है।

सोहनलाल रायसोनी ने मासखमण कर नए इतिहास का सृजन किया है। सुदृढ़ मनोबल वाला व्यक्ति ही तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। तपस्या में शरीरबल से ज्यादा मनोबल एवं संकल्पबल काम करता है। परिवार के सहयोग एवं गुरुकृपा से आज इनका संकल्प फलवान बना है। तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहें, मंगलकामना।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने तप अनुमोदना गीत का संगान किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। सुनिता रायसोनी ने विचार व्यक्त किए। रायसोनी परिवार की बहुओं, पोतियों ने गीत प्रस्तुत किया। पोतों ने लघु नाटिका के द्वारा तप की अनुमोदना की। मंच संचालन करते हुए सभा मंत्री गजेंद्र खटेड़ ने साध्वीप्रमुखाश्री के संदेश का वाचन किया।

तप अनुमोदना में भक्ति संध्या

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में मासखमण तप अनुमोदना के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। सपना गोलछा धर्मपत्नी जितेंद्र गोलछा के एवं धीरज दुगड़ सुपुत्र नरपतसिंह दुगड़ के मासखमण तप एवं रेखा दुगड़ धर्मपत्नी धीरज दुगड़ के २१ की तपस्या के उपलक्ष्य में भक्ति संध्या का शुभारंभ जसोल से पधारी जैन गायिका अलका पालगोता ढेलड़िया के नमस्कार महामंत्र एवं भिक्षु आरती के साथ हुआ, सभी उपस्थित भाई-बहनों ने संगीतकार अलका का स्वागत किया।

इसी क्रम में तेमम की बहनों ने भी कव्वाली के द्वारा तपस्वी की तप अनुमोदना की। हैदराबाद से पधारे राजेश श्यामसुखा ने भी अपने भाव गीतिका द्वारा प्रस्तुत किए।

मदुरै तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला एवं पदाधिकारियों ने सभा की तरफ से गायिका अलका ढेलड़िया का सम्मान किया। आयोजक गोलछा परिवार एवं दुगड़ परिवार की तरफ से भी उनका सम्मान किया गया। जितेंद्र गोलछा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मासखमण तपाभिनंदन

नोखा।

तेरापंथ भवन में फूसराज सुखलेचा के मासखमण के तथा उनकी पुत्री सेजल जैन के ९ की तपस्या का तप अभिनंदन कार्यक्रम शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सुखलेचा परिवार की बालिकाओं ने मंगलाचरण से की। तत्पश्चात परिवार से बहु-बेटियों ने गीतिका, तुषार एवं सुमन ने मारवाड़ी कविता, प्रिया, अरिहंत सुखलेचा, रवींद्र लुणावत और माणकचंद चोरड़िया ने अपने भावों द्वारा तप की अनुमोदना की। नन्ही बालिकाओं–गरिमा और गर्विता ने रोचक नाटक द्वारा अपने बाबा के मासखमण तप का गुणगान किया।

कार्यक्रम में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने अपने पाथेय में तप को मंगलकारी और अनंत कर्मों का क्षय करने का साधन बताया। श्रम और तप दोनों को चिकित्सा बताते हुए उनोदरी को भी तप बताया। अन्य साध्वीवृंद ने गीतिका एवं शासनश्री साध्वी समताश्री जी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन किया। महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल द्वारा सुमधुर गीतिकाओं का संगान किया गया। तेयुप के सुनील बैद, उपासक अनुराग बैद, उपासिका निर्मला सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु देवी बैद, सभा मंत्री इंदरचंद बैद आदि ने भी अपने भावों द्वारा तपस्वी के प्रति भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दुगड़, वरिष्ठ श्रावक धर्मचंद लुंकड़, सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवानी, तेयुप अध्यक्ष रूपचंद बैद, नगरपालिका उपाध्यक्ष निर्मल भूरा, बाबूलाल पारख आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के अरिहंत सुखलेचा ने किया।

तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप और सुखलेचा परिवार की तरफ से तपस्वी फूसराज सुखलेचा और सेजल जैन को तपाभिनंदन पत्र, साहित्य, सामायिक किट भेंट की गई।

मासखमण तप अनुमोदना

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में सुशीला देवी धारीवाल के मासखमण तप की अनुमोदना में तेरापंथी सभा एवं संघीय संस्थाओं द्वारा तप अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि जिनशासन का प्राण तत्त्व है–तपस्या। तपस्या जिनशासन की नीवों को मजबूती प्रदान करता है। तपस्या कर्म निर्जरा का अमोद्य साधन है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि सुशीला धारीवाल मासखमण तप की भेंट लेकर उपस्थित है। मासखमण का मनोरम दीप जला है। पूरा परिसर तप ज्योति से ज्योतिर्मय बन रहा है। पूरे परिवार का अच्छा सहयोग रहा। विमला मांडोत ने अठारह का तप किया है। बारह मासखमण कर चुके हैं। तपस्वियों की ख्यात में नाम लिखाया है। तेरहवें मासखमण की हम मंगलकामना कर रहे हैं। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन किया। सभा मंत्री गजेंद्र खटेड़ ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन करते हुए सभा की ओर से शुभकामनाएँ संप्रेषित की। महासभा से ज्ञानचंद आंचलिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, धनराज धारीवाल, उषा बोहरा, संगीता गादिया ने विचार व्यक्त किए।

परिवार की बहनों ने गीतिका व बच्चों ने कविता प्रस्तुत की। सभा व ट्रस्ट की ओर से दोनों तपस्वियों का सम्मान किया। तेयुप द्वारा आयोजित भिक्षु स्मृति साधना के शुभारंभ के अवसर पर साधकों को साध्वीश्री ने संकल्पों से संकल्पित करवाया। गणपतकंवर डूंगरवाल की स्मृति सभा में शोक संतप्त परिवार को साध्वीश्री जी ने संबल प्रदान किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

राजलदेसर।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में 'प्रेक्षाध्यान - जीवन में लाए बदलाव' की कार्यशाला समायोजित हुई। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि जो रात्रियाँ बीत रही हैं वह वापस नहीं आती, परंतु धर्म ध्यान करने वाले व्यक्ति का जीवन सफल बन जाता है। प्रेक्षाध्यान से चित्त निर्मल होता है।

कार्यशाला में साध्वी विनम्रयशा जी ने प्रेक्षाध्यान करवाया और मंगलभावना भी करवाई। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने अपना उद्बोधन दिया। साध्वी धर्मयशा जी ने कहा प्रेक्षाध्यान एक ऐसी चाबी है जो भीतर के पट को खोलती है। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने अनेक प्रयोग और टिप्स भी बताए।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल द्वारा वर्कशॉप का मंगलाचरण गीत से हुआ। साध्वी परिवार द्वारा प्रेक्षाध्यान पर सामुहिक गीत का संगान हुआ। मंच संचालन साध्वी विनम्रयशा जी ने किया।

✦ *मन में दुर्विचारों का प्रवेश होने देना मन का असंयम और मन की अनपेक्षित चंचलता को कम करना मन का संयम होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान की भूमिका

प्रश्न : महाव्रत या अणुव्रत की आराधना करने से ध्यान की पूर्वभूमिका अच्छी प्रकार निर्मित हो सकती है या उसके लिए और भी कुछ करना जरूरी है?

उत्तर : महाव्रत जीवन की उत्कृष्ट चर्या है। महाव्रती साधक के सामने ऐसी कोई बाहरी बाधा नहीं रहती, जिसके कारण वह ध्यान के क्षेत्र में आगे न बढ़ पाए। अब रहा प्रश्न अणुव्रती साधक का। उसके लिए सबसे पहली अपेक्षा है—व्यसन-मुक्ति। आज कुछ लोग ध्यान के परिपार्श्व में भी मादक पदार्थों के सेवन को अपनी स्वीकृति देते हैं। भांग, गांजा, चरस आदि मादक वस्तुओं का प्रयोग पहले भी होता था और आज भी होता है। इसके सेवन से एक बार ध्यान की अच्छी भूमिका बन सकती है, किंतु उसके कुछ समय बाद जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं, उन्हें दूर करना बहुत कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से ध्यान की सात्त्विक भूमिका का निर्माण करने के लिए व्यसन-मुक्ति बहुत जरूरी है। अणुव्रत का तो यह विशेष आदर्श है।

व्यसन-मुक्त जीवन में भी ध्यान की दो सबसे बड़ी बाधाएँ हैं—अहंकार और ममकार। जब तक अस्मिता और ममता का ग्रंथिभेद नहीं होता, तब तक प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल सकती। ध्यान की भूमिका में निर्विकल्पता का विकास जरूरी है। मनुष्य विकल्पों का सर्जन करता है अहंकार और ममकार से। अहंकार व्यक्ति की चेतना को आवृत्त करता है और ममकार उसको पर-सापेक्ष बनाता है। संस्कार के सारे संबंध अहंकार और ममकार से जुड़े हुए हैं। कषायों का विस्तार भी अहंकार और ममकार के कारण होता है। मानवीय वृत्तियों की कलुषता के निमित्त ये ही हैं। इसलिए ध्यान की पूर्वभूमिका का निर्माण करने की दृष्टि से अहंकार और ममकार पर विजय पाना जरूरी है। जिस क्षण ये दोनों तत्त्व नियंत्रित हो जाते हैं, ध्यान की भूमिका अपने आप प्रशस्त हो जाती है।

कुछ लोगों का अभिमत है कि पूर्वभूमिका की प्रतीक्षा में समय लगाने की आवश्यकता नहीं है। ध्यान प्रारंभ करो, उसके ये परिणाम स्वतः आ जाएँगे। इस अभिमत के साथ असहमति वाली कोई बात नहीं है। फिर भी यह तो मानना ही होगा कि यह साधना का सुनियोजित क्रम नहीं है। जिस प्रकार खेती करने के लिए योजनाबद्ध पद्धति से काम होता है। भूमि को उर्वर बनाने के लिए उसमें खाद दी जाती है, पानी दिया जाता है, उसे साफ-सुथरा और व्यवस्थित किया जाता है। इस क्रम से फसल अच्छी होती है। इसी प्रकार ध्यान-साधना भी योजनाबद्ध की जाए तो उसका परिणाम जल्दी आता है। ध्यान-साधना की संक्षिप्त योजना यह हो सकती है—

ध्यान का अर्थ है—चित्त की एकाग्रता। एकाग्रता के लिए विकल्प-शून्यता नितांत अपेक्षित है। विकल्पों की परंपरा समाप्त करने के लिए चैतसिक निर्मलता का होना जरूरी है। चित्त पर जो रज जमी हुई है, जो मैल जमा हुआ है, उसे दूर करने के लिए महाव्रत और अणुव्रत की आराधना आवश्यक है। व्रतों की आराधना का फलित है—मैत्री, ऋजुता, पदार्थ-विरति, आत्मानुभूति और अमूर्च्छा। इसके द्वारा चित्त को भावित करने से अहंकार और ममकार की ग्रंथियाँ खुलती हैं। ग्रंथिभेद से कर्म संस्कार निर्मूल होते हैं। इस प्रकार ध्यान की एक ठोस पृष्ठभूमि निर्मित हो जाती है। इस पृष्ठभूमि पर साधक ध्यान की विभिन्न भूमिकाओं से गुजरता हुआ अपनी मंजिल तक पहुँचने में सफल हो जाता है।

ध्यान-साधना और गुरु

कठिन साधना-मार्ग भी होता सहज सुगम्य।
साधक यदि पाता रहे, गुरु-पथ दर्शन रम्य।।
महाव्रती आचार्यवर स्वयं साधनालीन।
क्षांत मुक्त मृदु ऋजुमना, गुरु-पद पर आसीन।।
अथवा प्रेक्षा योग में पारंगत धृतिमान।
कहलाते गुरु अनुभवी कुशल परिज्ञावान।।

प्रश्न : ध्यान की पूर्वभूमिका बनाने के लिए और साधना का पथ खोजने के लिए साधक को स्वयं प्रयत्नशील रहना चाहिए या उसे किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन में काम करना चाहिए?

उत्तर : साधक दो प्रकार के होते हैं—स्वयंबुद्ध और बुद्धबोधित। प्रथम श्रेणी के साधक असाधारण होते हैं। वे स्वयं अपना रास्ता बनाते हैं और किसी विघ्न-बाधा की चिंता किए बिना ही उस पर चल पड़ते हैं। जिस ओर उनके चरण टिकते हैं, नए पथ का निर्माण हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए किसी गुरु के मार्गदर्शन की अपेक्षा नहीं रहती। किंतु जिन साधकों की अपनी प्रज्ञा जागृत नहीं है, जो साधना की प्रक्रिया से अनजान हैं और जो अज्ञात पथ पर बढ़ने का साहस नहीं कर सकते, उनके लिए सुयोग्य गुरु का पथ-दर्शन बहुत आवश्यक होता है।

गुरु की गरिमा सब स्थानों में है। एक छोटे शिल्प को सीखने के लिए भी गुरु की जरूरत पड़ती है, फिर ध्यान जैसा महाशिल्प तो बिना किसी निर्देशक की देखरेख के अधिगत हो भी कैसे सकता है? ध्यान सर्वथा आंतरिक प्रक्रिया है। इसके रहस्य पुस्तकों से नहीं, अनुभव से उपलब्ध हो सकते हैं। पुस्तकीय ज्ञान समूचे विश्व का बोध दे सकता है। पर अपने आपके बारे में सही जानकारी पुस्तकों के द्वारा नहीं मिल सकती। अपनी जानकारी पाने के लिए गुरु की शरण में जाना ही पड़ता है। गुरु अनुभवी होता है। वह स्वयं साधना करके अनुभवों का अर्जन करता है और उन्हें जिज्ञासु साधकों में बाँटकर अधिक समृद्ध हो जाता है। गुरु का पथदर्शन मिलने से कठिन साधना मार्ग भी सहज-सरल बन जाता है। इसी तथ्य को अभिव्यक्ति देते हुए एक राजस्थानी कवि कहता है—

चलतां चलतां जुग भया, तो ही न पाया थाम।
मारग में सतगुरु मिले पावकोस पर गाम।।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१३)

चिर प्रतीक्षित इस धरा पर जन्म तेरा।
तिमिर-तट पर उतरता स्वर्णिम सवेरा।।

खोलते ही आँख होता नया स्पंदन
परस पा तेरा बने यह धूल चंदन
मधुर सपनों से सजाकर छंद कितने
कर रही साँसें जगत की मौन वंदन
टूट जड़ता का गया है सघन घेरा।।

पथ अपरिचित चल रहा राही अकेला
बीच में है रातरानी और बेला
ज्योति का झरना यहाँ जो उतर आए
स्वयं खुशियों का लगेगा यहाँ मेला
पंथ ही फिर तो बने स्थायी बसेरा।।

हृदय-मंदिर कर रहा पल-पल प्रतीक्षा
है न दर दीवार कोई भी जहाँ पर
जब मिले अवकाश भीतर झाँक लेना
रूप तेरा ही मिलेगा बस वहाँ पर
एक दीपक ही बहुत हरने अँधेरा।।

(१४)

आज धरा में क्यों पुलकन है क्यों नभ में नूतन उच्छ्वास
प्राणों के पंछी क्यों चहकें क्यों है कण-कण में मृदुहास।।

क्यों कल-कल निनाद निर्झर का नाच रहे हैं क्यों मन-मोर
बहती क्यों मलयजी हवाएँ उदित हुई क्यों उजली भोर
मुसकानों का मौसम लेकर उतरा क्यों कोई मधुमास।।

गाती क्यों बुलबुलें तराना क्यों उठता सागर में ज्वार
दीप जले क्यों आज मांगलिक क्यों मन का निर्बन्ध विहार
मौसम खिला-खिला-सा लगता बिखर रहा है क्यों उल्लास।।

जग के सभी झमेलों से हूँ अब तक मैं पूरी अनजान
साथ तुम्हारे चलकर मैंने पाई है अपनी पहचान
तुम ही मंजिल मेरे पथ की तुम ही मानस के विश्वास।।

ऐसी प्यास जगाओ मन में खुद ही जलधर भू पर आएँ
मचल रहे सपने आँखों में कैसे सारे सच कर पाएँ
तुम हो कल्पवृक्ष इस युग के तुम आस्था की मधुर सुवास।।

शक्ति कौन-सी पास तुम्हारे शांत हो गया हर तूफान
धूप-छाँव झेली समता से रहे सदा ही तुम गतिमान
लोकगीत-सा पावन जीवन खुला-खुला चिंतन-आकाश।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(२५) प्रमादं कर्म तत्राहुः, अप्रमादं तथापरम्।
तदभावाद्शतस्तच्च, बालं पण्डितमेव वा।।

प्रमाद कर्म है और अप्रमाद अकर्म। प्रमादयुक्त प्रवृत्ति बंध का और अप्रमत्तता मुक्ति का हेतु है। प्रमाद और अप्रमाद की अपेक्षा से व्यक्ति के वीर्य-पराक्रम को बाल और पंडित कहा जाता है तथा अभेददृष्टि से वीर्यवान् व्यक्ति भी बाल और पंडित कहलाता है।

मनुष्य प्रवृत्ति-प्रधान है। प्रवृत्ति के बिना वह एक क्षण भी नहीं रह सकता। प्रवृत्ति के दो रूप हैं—शुभ और अशुभ। अशुभ प्रवृत्ति राग-द्वेष और मोहमय होती है। इसलिए उसे प्रमाद कहा जाता है। प्रमाद से अशुभ कर्म का संग्रह होता है। इससे आत्मा की स्वतंत्रता छीनी जाती है। शुभ प्रवृत्ति संयम-प्रधान होने से प्रमाद रूप नहीं है। उससे पुण्य-कर्म का संग्रह होता है और पूर्वबद्ध कर्मों का निर्जरण भी। कर्म-क्षय की दशा में आत्मा कर्म-ग्रहण की दृष्टि से अकर्मा बन जाती है, किंतु चेतना की क्रिया बंद नहीं होती।

प्रमाद और अप्रमाद का प्रयोग जहाँ वीर्य-शक्ति के साथ होता है, वहाँ वह बाल-वीर्य और पंडित-वीर्य कहलाता है। बाल शब्द अबोधकता का सूचक है। पंडित की चेष्टाएँ ज्ञानपूर्वक होती हैं। ज्ञान हिताहित का विवेक देता है। संयम हित है और असंयम अहित। असंयम का परिहार और संयम का स्वीकार ज्ञान से होता है। बाल-वीर्य की अवस्था में ज्ञान का स्रोत सम्यक् दिशा-संयम की ओर नहीं होता। वहाँ असंयम की बहुलता रहती है। पंडित-वीर्य संयम-प्रधान होता है। उसमें अशुभ कर्म का स्रोत खुला नहीं रहता। आत्मा क्रमशः शुभ से भी मुक्त होकर अकर्मा बन जाती है।

(२६) प्रतीत्याऽविरतिं बालो, द्वयञ्च बालपण्डितः।
विरतिञ्च प्रतीत्यापि, लोकः पण्डित उच्यते।।

अविरति की अपेक्षा से व्यक्ति को बाल, विरति-अविरति—दोनों की अपेक्षा से बाल-पंडित और विरति की अपेक्षा से पंडित कहा जाता है।

शक्ति का केंद्र आत्मा है। आत्मा की अक्रियाशीलता में वीर्य सजीव नहीं होता। वीर्य के तीन स्रोत हैं—
(१) जो सर्वथा संयम की ओर प्रवाहित होता है।
(२) जो संयम-असंयम की ओर प्रवहमान रहता है।
(३) जो सर्वथा संयम की ओर उन्मुख रहता है।
वीर्य के मार्गों के कारण व्यक्ति के तीन रूप बनते हैं—बाल, बाल-पंडित और पंडित।
विरति का अर्थ है—पदार्थ के प्रति आसक्ति का परित्याग और अविरति का अर्थ है—पदार्थ के प्रति व्यक्त या अव्यक्त आसक्ति।
विरति और अविरति की अपेक्षा से मनुष्यों के तीन प्रकार होते हैं—
बाल-असंयमी, जिसमें कुछ भी विरति नहीं होती।
बाल-पंडित—उपासक, जो यथाशक्ति विरति करता है। इसमें विरति और अविरति दोनों का अस्तित्व रहता है।
पंडित—पूर्ण संयमी, मुनि।
ये तीनों जैन पारिभाषिक शब्द हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१५ : सम्यक्त्वी में शरीर कितने हैं?

उत्तर :

औपशमिक सम्यक्त्वी में	–	४, औदारिक, वैक्रिय, तैजस्, कार्मण
क्षायिक सम्यक्त्वी में	–	५, सभी
क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी में	–	५, सभी
सास्वादन सम्यक्त्वी में	–	४, आहारक छोड़कर
वेदक समयक्त्वी में	–	३, औदारिक, तैजस्, कार्मण

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य स्थूलभद्र

भद्रबाहु के बाद वी०नि० १७० (वि०पू० ३००) में स्थूलभद्र ने आचार्य पद का नेतृत्व संभाला था। उनसे विविध रूपों में जैनशासन की प्रभावना हुई थी। दुष्काल-परिसमाप्ति के बाद आगम-वाचना का महत्त्वपूर्ण कार्य आर्य स्थूलभद्र की सन्निधि में हुआ था। स्थूलभद्र के जीवन का लगभग एक शतक आरोह और अवरोह से भरा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पृष्ठ है।

आचार्य स्थूलभद्र दीर्घजीवी आचार्य थे। तीस वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। लगभग सत्तर वर्ष के मुनिकाल में पैंतालीस वर्ष तक उन्होंने आचार्य पद के दायित्व को कुशलतापूर्वक वहन किया। उनके जीवन की विशेषताओं से आचार्य पद स्वयं मंडित हुआ। वैभारगिरि पर्वत पर पंद्रह दिन के अनशन के साथ वी०नि० २१५ (वि०पू० २५५) में वे स्वर्गवासी हुए।

आचार्य महागिरि

आर्य महागिरि जैन श्वेतांबर परंपरा के प्रभावक आचार्य थे। वे महामेधावी, परमत्यागी निरतिचार संयम-धर्म के आराधक और जिनकल्प तुल्य साधना करने वाले विशिष्ट साधक थे। तीर्थंकर महावीर की पट्टधर परंपरा में उनका क्रम नौवाँ है। दस पूर्वधर परंपरा में आर्य महागिरि का स्थान सर्वप्रथम है।

आर्य महागिरि का जन्म एलापत्य गोत्र में हुआ। उनका जन्म-समय वी०नि० १४५ (वि०पू० ३२५) बताया गया है। संसार से विरक्त होकर तीस वर्ष की उम्र में उन्होंने श्रुतधर आचार्य स्थूलभद्र के पास वी०नि० १७५ (वि०पू० २९५) में मुनि दीक्षा ग्रहण की। गुरु की सन्निधि में चालीस वर्ष तक रहे। इस अवधि में उनको दस पूर्वों की विशाल ज्ञाननिधि गुरु से उपलब्ध हुई।

आर्य सुहस्ती भी आचार्य स्थूलभद्र द्वारा दीक्षित मेधावी श्रमण थे। उनकी दीक्षा आर्य महागिरि की दीक्षा के अड़तीस अथवा उनतालीस वर्ष बाद हुई थी। आचार्य स्थूलभद्र के जीवन का वह संध्याकाल था। भावी आचार्य पद-निर्णय के समय आचार्य स्थूलभद्र ने अपने स्थान पर शांत, दांत, लब्धि-संपन्न, आगमविज्ञ, आयुष्यमान, भक्ति-परायण आर्य महागिरि एवं सुहस्ती इन दोनों शिष्यों की नियुक्ति की। इसका कारण उभय शिष्यों का प्रभावशाली व्यक्तित्व ही हो सकता है।

उस समय एकतंत्रीय शासन की परंपरा सबल थी। उभय शिष्यों की नियुक्ति एक साथ होने पर भी कार्य-संचालन की दृष्टि से एक-दूसरे का हस्तक्षेप नहीं था। दीक्षा क्रम में ज्येष्ठ शिष्य ही आचार्य पद के दायित्व को निभाते थे। आचार्य यशोभद्र एवं स्थूलभद्र के द्वारा आचार्य पद के लिए दो-दो शिष्यों की नियुक्ति एक साथ होने पर भी यशस्वी आचार्य यशोभद्र के बाद उनके दायित्व को दीक्षा क्रम में ज्येष्ठ होने के कारण आचार्य संभूतविजय ने एवं आचार्य स्थूलभद्र के बाद उनका दायित्व आचार्य महागिरि ने संभाला था।

श्रुतसागर आचार्य भद्रबाहु अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता आचार्य संभूतविजय के अनुशासन का एवं आर्य सुहस्ती आर्य महागिरि के अनुशासन का सुविनीत शिष्य की भाँति पालन करते रहे थे।

आर्य महागिरि महान् योग्य आचार्य थे। उन्होंने अनेक मुनियों को आगम-वाचना प्रदान की। आचार्य सुहस्ती जैसे महान् प्रभावक आचार्य भी उनके विद्यार्थी शिष्य-समूह में एक थे।

उग्र तपस्वी आर्य महागिरि के महान् उपकार के प्रति आर्य सुहस्ती आजीवन कृतज्ञ रहे एवं उनको गुरु-तुल्य सम्मान प्रदान किया था।

गुरुगच्छ धुराधारण धौरेय, धीर, गंभीर आर्य महागिरि ने एक दिन सोचा—गुरुतर आत्म-विशुद्धिकारक जिनकल्प तप वर्तमान में उच्छिन्न है, पर तत्सम तप भी पूर्व संचित कर्मों का विनाश कर सकता है। मेरे स्थिरमति अनेक शिष्य सूत्रार्थ के ज्ञाता हो चुके हैं। मैं अपने इस दायित्व से कृतकृत्य हूँ। गच्छ की प्रतिपालना करने में सुहस्ती सुदक्ष है। गण-चिंतन से मुझे मुक्त करने में वह समर्थ है। अतः इस गुरुतर दायित्व से निवृत्त एवं गण से संबंधित रहते हुए आत्महितार्थ विशिष्ट तप में स्व को नियोजित कर मैं महान् फल का भागी बनूँ—यह मेरे लिए कल्याणकारक मार्ग है।

महासंकल्पी अंतर्मुखी आचार्य महागिरि की चिंतनधारा दृढ़ निश्चय में बदली। संघ-संचालन का भार आर्य सुहस्ती को संभलाकर वे जिनकल्पतुल्य साधना में प्रवृत्त हुए। भयावह उपसर्गों में निष्प्रकंप नगर, ग्राम, आराम आदि के प्रतिबंध से मुक्त बने एवं श्मशान-भूमिकाओं में गणनिश्रित विहरण करने लगे।

आर्य महागिरि दीर्घजीवी आचार्य थे। वे तीस वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। मुनि पर्याय का उनका काल चालीस वर्ष का एवं युगप्रधान आचार्य पद का तीस वर्ष का था।

उन्होंने युग का पूरा एक शतक अपनी आँखों से देखा। मालव प्रदेश के गजाग्रपद स्थान पर वी०नि० २४५ (वि०पू० २२५) में स्वर्गवासी बने। **(क्रमशः)**

✦ ज्ञान एक ऐसा तत्त्व है, जो प्रकाश करने वाला होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मैं हूँ जैन जीनियस : प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

टीपीएफ द्वारा 'मैं हूँ जैन जीनियस' प्रतियोगिता के अंतर्गत जीव-अजीव पुस्तक के आधार पर १३ से २५ बोल की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिमा की संयोजिका पूजा चंडालिया ने बताया कि प्रतियोगिता में ६ प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता विभिन्न विषय पर हर मंगलवार को आयोजित होगी। पिछली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सीमा बड़ोला, द्वितीय स्थान यशवंत सुतरिया, तृतीय स्थान मैना बुरड़ ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को कार्यक्रम सहयोगी श्रद्धानिष्ठ श्रावक विजयलाल सुतरिया, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति सज्जनदेवी, प्रकाशचंद-पारसदेवी व सुतरिया परिवार द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, भीलवाड़ा टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया, मंत्री अभिषेक कोठारी, प्रतियोगिता संयोजिका अंकिता कावड़िया, अंकिता जैन, सोनल मारू, सुरभि टोडरवाल, नेहा ओस्तवाल उपस्थित रहे। पुनीत बोहरा ने प्रतियोगिता का संचालन किया।

वैक्सीनेशन शिविर

भीलवाड़ा।

टीपीएफ द्वारा वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर आयोजन के संयोजक डॉ० चेतन सामरा रहे। शिविर में आचार्यश्री महाश्रमण जी तथा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी को वैक्सीन का दूसरा डोज लगवाया गया साथ ही लगभग ८७ साधु-साध्वियों को भी वैक्सीन लगवाई गई। सभी केंद्रीय काशीद, टीपीएफ कैंप ऑफिस स्टॉफ, महासभा स्टॉफ आदि सदस्यों को भी दूसरा डोज लगवाया गया।

वैक्सीन शिविर में टीपीएफ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, भीलवाड़ा टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया, मंत्री अभिषेक कोठारी, मध्य जोन सहमंत्री रचना सुराणा, सदस्य मुकेश सुतरिया ने सेवाएँ प्रदान की।

संगठन यात्रा

नोएडा।

टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख एवं राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, नॉर्थ क्षेत्रीय टीम अध्यक्ष श्रील लुंकड़, मंत्री स्वीटी जैन, उपाध्यक्ष राजेश जैन के साथ सार-संभाल करने नोएडा पधारे। टीपीएफ, दिल्ली अध्यक्ष डॉ० कांति श्यामसुखा, मंत्री अंकित श्यामसुखा, सहमंत्री रोहित डूंगरवाल, नॉर्थ जोन फेमिना संयोजक हेमा जैन पधारे।

टीपीएफ, नोएडा अध्यक्षा डॉ० आरती कोचर ने अपनी पूरी टीम के साथ सबका स्वागत किया। नोएडा मंत्री प्रसन्न सुराणा, कोषाध्यक्ष कनिष्क बैद, सहमंत्री डॉ० रूशीना सिंघी, श्वेता सेठिया उपस्थित थे। टीपीएफ से निलेश गीड़िया, प्रेम सेखानी भी उपस्थित थे।

संगठन यात्रा

उदयपुर।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, मुख्य न्यासी एम०सी० बलडोटा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, ऋतु चोरड़िया का आगमन झीलों की नगरी उदयपुर में आए टीपीएफ अध्यक्ष मुकेश बोहरा एवं मंत्री कुणाल गांधी द्वारा स्वागत एवं 'संवाद सदस्यों से' का आयोजन जिसमें उदयपुर के विशिष्ट महानुभाव उपस्थित रहे। इस अवसर पर शिक्षा सहयोग योजना हेतु टी०के० बोहरा, हेमंत तोतावत, भूपेंद्र डोसी ने अनुदान प्रदान किया।

सरोज व चंद्रेश बाफना को डायमंड डोनर हेतु सम्मान किया गया। मुकेश बोहरा व कुणाल गांधी ने फेलो सदस्यता ग्रहण की। राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, भीलवाड़ा शाखा अध्यक्ष राकेश सुतरिया भी उपस्थित थे। संचालन डॉ० अनिता मेहता व डॉ० ज्योति नाहर द्वारा किया गया।

संगठन यात्रा

फरीदाबाद।

टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख एवं राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, नॉर्थ क्षेत्रीय टीम अध्यक्ष श्रील लुंकड़, मंत्री स्वीटी जैन, उपाध्यक्ष राजेश जैन के साथ सार-संभाल करने नोएडा पधारे। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष डॉ० कांति श्यामसुखा, मंत्री अंकित श्यामसुखा, नोएडा अध्यक्ष आरती कोचर, मंत्री प्रसन्न सुराणा पधारे।

हिम्मत जैन ने फरीदाबाद टीम की वित्तीय लेखा-जोखा, केंद्र द्वारा निर्देशित अन्य अनुपालनाओं में समयबद्धता का उल्लेख किया। गुरुदेव के दिल्ली पदार्पण से पूर्व सदस्य संख्या में वृद्धि हेतु आह्वान किया। परिचय सत्र से प्रारंभ इस संवाद में फरीदाबाद अध्यक्ष विजय नाहटा ने सभी आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन किया। साथ ही नॉर्थ जोन अध्यक्ष श्रील लुंकड़ ने फरीदाबाद द्वारा कोरोना काल में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए सभी को प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने सभी को प्रेरणा देते हुए टीपीएफ के चार स्तंभों से सभी को अवगत कराया तथा राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे उपक्रमों की उपयोगिता तथा जरूरत पर प्रकाश डाला। इस अवार पर सदस्यों की सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया। भावना सिंघल ने इस अवसर पर शिक्षा सहयोग योजना में १ विद्यार्थी को एडॉप्ट किया।

कार्यक्रम का संचालन फरीदाबाद मंत्री भरत बैगवानी और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष हेमराज सेठिया ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अगवानी हेतु फरीदाबाद की सभी संस्थाएँ–तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल व अणुव्रत समिति के पदाधिकारी उपस्थित थे।

कार्यशाला

सूरत।

टीपीएफ, सूरत व तेमम, उधना के संयुक्त तत्त्वावधान में कार्यशाला का आयोजन मुनि सुव्रतकुमार जी के सान्निध्य में किया गया। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र व महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। महिला मंडल अध्यक्षा जसु बाफना व टीपीएफ, सूरत अध्यक्षा भारती छाजेड़ ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

मुनि सुव्रतकुमार जी ने कहा कि हम जितने स्वस्थ होंगे, आर्त्त ध्यान कम होगा। गुरुदेव भी साधु-साध्वियों को स्वस्थ रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। डॉ० काजल मांगूकिया ने प्रोजेक्टर के माध्यम से ब्रेस्ट कैंसर ना हो, इसकी एक्सरसाइज और टिप्स दिए। सभी महिलाओं ने डॉक्टर को उत्साह से सुना। डॉ० काजल ने सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया। संचालन सहमंत्री स्वीटी बाफना ने किया। आभार मंत्री सुनीता चोरड़िया ने किया।

मेडिकल कैंप का आयोजन

सूरत।

टीपीएफ द्वारा मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण द्वारा की गई। कार्यक्रम में विभिन्न चैकअप किए गए। कैंप में १११ संभागियों ने अपना चैकअप करवाया। साथ ही डायबिटीज स्पेशलिस्ट डॉक्टर रिंकल द्वारा लोगों को खान-पान पर किस प्रकार विशेष ध्यान रखना चाहिए उसकी जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष हरीश कावड़िया, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, सूरत अध्यक्ष भारती छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत अध्यक्ष विजयकांत खटेड़ आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को संचालित हेतु टीपीएफ कार्यकर्ता दीपांशु सेखानी, विधि जैन, सुमन सुखानी, श्रीपाल संकलेचा, अखिल मारू ने अपनी सेवाएँ प्रदान की। आचार्य मह्मपज्ञ चिकित्सालय एवं तेयुप, सूरत का भी पूर्ण सहयोग रहा।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेमम के तत्त्वावधान में साहुकारपेट सभा भवन में भंवरलाल प्रकाशचंद धोका आजीवन रोलिंग शिल्ड प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि महाप्रज्ञ जी के जीवन में विनय, श्रद्धा एवं समर्पण भाव ऐसा अटूट था कि जिसके कारण अपने गुरु के प्रति दिल में ऐसा स्थान बना लिया था कि आचार्य तुलसी ने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञ जी को आचार्य पद पर आरूढ़ कर दिया। यह इतिहास की विलक्षण घटना है।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने इस प्रतियोगिता के लिए विशेष श्रम किया। कार्यक्रम के शुभारंभ में सभी प्रतियोगियों को साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंगलपाठ श्रवण करवाया। मंगलाचरण संगीता आच्छा, रानी मांडोत, सुमन बोहरा, मंजु दक एवं रक्षा आच्छा ने किया। कार्यसमिति कनक पुगलिया, लीला सेठिया भी उपस्थित थे। सभी का स्वागत चेन्नई तेमम की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने किया।

महाप्रज्ञ प्रश्न मंच के संयोजक का दायित्व संभालते हुए साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने सभी ग्रुपों से प्रश्न पूछे। प्रतियोगी द्वारा जिन प्रश्न का उत्तर ना दे पाने पर सही उत्तर साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने बताए। १३ राउंड में प्रतियोगी को प्रश्न पूछे गए। दर्शकों से भी प्रश्न पूछे। भंवरलाल प्रकाशचंद धोका रोलिंग शिल्ड प्रश्न मंच प्रतियोगिता के प्रायोजक परिवार की ओर से उपस्थित राजश्री डागा, गौतम डागा का महिला मंडल की ओर से सम्मान किया गया।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला ग्रुप शील्ड विजेता रहा। प्रथम स्थान विनीता कोठारी, खुशी धोका, द्वितीय स्थान संगीता बरड़िया, विमला लोढ़ा और तृतीय स्थान सुमित्रा सामसुखा, लता डूंगरवाल रहे। सभी विजेताओं एवं प्रतियोगियों को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में स्कोरिंग हेमलता नाहर ने, संचालन वंदना पगारिया ने, समय प्रबंधन एवं आभार ज्ञापन प्रीति डूंगरवाल ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञानशाला संगोष्ठी का आयोजन

गांधीनगर-बैंगलोर।

साध्वी लावण्याश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला परिवार की प्रशिक्षिकाओं द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं को उद्बोधन प्रदान करते हुए ज्ञानशाला में कैसे स्वयं को परिपक्व बन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, इसकी प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी ने ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से पाथेय प्रदान करवाया। साध्वी सिद्धांतप्राा जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने भी प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में लगभग ३० प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया। संयोजिका नीता गादिया ने ज्ञानशाला के कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी। मुख्य प्रशिक्षिका मंजू गन्ना ने आगामी कार्यशालाओं के रूपरेखा की जानकारी दी। चेतन वैदमूथा ने सबका स्वागत किया। प्रश्नोत्तरी में उत्तीर्ण मधु खटेड़, सुमन वैदमूथा और सपना रायसोनी को पुरस्कृत किया गया। सुमित्रा बरड़िया ने २५ बोल की जानकारी दी।

शपथ ग्रहण समारोह

जसोल।

अणुव्रत समिति का शपथ ग्रहण समारोह मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में रखा गया। निवर्तमान अध्यक्ष डूंगरराम बोगु ने नव निर्वाचित अध्यक्ष पारसमल गोलेचछा को शपथ दिलाई। अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने पदाधिकारी व कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम का शुभारंभ डूंगरचंद बागरेचा द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। कार्यक्रम में मुनि धर्मेश कुमार जी ने अणुव्रत के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अतिथि प्रबुद्ध वक्ता ओम बांठिया ने अपने विचार रखे। धन्यवाद व आभार ज्ञापन पारसमल गोलेच्छा ने किया। कार्यक्रम का संचालन भूपत राज कोठारी ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

दिल्ली।

तेरापंथी सभा, रोहिणी में दीक्षार्थिनी मुमुक्षु सुरभि का शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। प्रवीण जैन ने मंगलाचरण किया। शासनश्री रतनश्री ने मुमक्षु सुरभि को संबोध प्रदान करते हुए कहा कि सुरभि तुम आचारनिष्ठ, मर्यादा निष्ठ एवं आज्ञा निष्ठ बनना एवं साधना के उच्च शिखरों पर चढ़ना।

शासनश्री सुव्रता जी ने कहा यह संसार अनेकानेक दुखों से संकुल है। जन्म-मृत्यु जरा और रोग ये चार प्रमुख दुःख हैं। अवांतर दुःख तो सहस्रों हो सकते हैं। यह सुरभि इन दुखों से सदा-सदा के लिए मुक्ति पाने के लिए दीक्षा ग्रहण कर रही है।

हिम्मत आदि गायक मंडली ने उच्च स्वरों से गीत का संगान किया। तेयुप की ओर से शुभम, रोहिणी तेरापंथी सभा की ओर से उत्तम छाजेड़ ने मंगलभावना व्यक्त की। परिवार की ओर से शिवानी, कुसुम खटेड़, श्वेता ने भावाभिव्यक्ति दी।

दीक्षार्थिनी सुरभि ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा—मैं सौभाग्यशालिनी हूँ कि मुझे तेरापंथ जैसे गौरवशाली संघ में दीक्षित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। अंत में तेममं एवं तेरापंथी सभा सदस्यों ने संयुक्त रूप से सुरभि का अभिनंदन एवं माल्यार्पण किया।

फिजियोथैरेपी सेंटर का उद्घाटन एवं कार्यशाला का आयोजन

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में अभातेममं के तत्त्वावधान में गदग तेरापंथ महिला मंडल उत्तर कर्नाटक स्तरीय कार्यशाला लक्ष्य की ओर अग्रसर एवं फिजियोथैरेपी सेंटर का उद्घाटन किया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी अपना उद्बोधन दिया।

मंदिरमार्गी खतरगच्छ संघ के साध्वी नम्र ज्योति ने कहा कि संसार के छोटे से छोटे प्राणी का भी लक्ष्य होता है। बिना लक्ष्य के एक कदम भी कोई आगे नहीं बढ़ सकता। साध्वी मेरूप्रभा जी ने गीतिका एवं छोटी साध्वी दक्षप्रभा जी ने कविता की प्रस्तुति दी। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि तलहटी से शिखर तक पहुँचने के लिए कुछ लक्ष्य बनाना पड़ता है, शीर्ष पर वही पहुँच सकता है जो लक्ष्य बनाता है।

डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने सारे कार्यक्रम का संचालन किया। अभातेममं के महामंत्री तरुण बोहरा, अभातेममं की सदस्य उपासिका निर्मला चंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि डॉ० जगदीश सिरोल ने कहा कि महिला मंडल का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे यह सेवा का अवसर प्रदान किया। स्टेज प्रोटोकॉल का संचालन मधु संकलेचा, अतिथि परिचय शोभा संकलेचा व सीमा कोठारी अतिथि सम्मान के लिए एनाउंसमेंट का कार्य सारिका संकलेचा व सहमंत्री मंजु दक ने किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने स्वागत गीत के द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की संयोजिका व उपासिका विमला कोठारी ने अपने विचार रखे। महिला मंडल की संस्था परिचय उपासिका सरस्वती कोठारी ने दिया। उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जयंतीलाल चोपड़ा के संदेश का वाचन सुरेश ने किया। सौदत्ती, हुबली, गंगावती, हलकल, हॉस्पेट, कंपली, गुंटकल आदि क्षेत्रों की बहनों ने सौत्साह भाग लिया और सभी क्षेत्रों की बहनों को गदग क्षेत्र के द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के प्रायोजक रहे सरस्वती अमृतलाल कोठारी। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन महिला मंडल की मंत्री विजेता भंसाली ने किया।

गुलदस्ता दोस्ती और अपनत्व का

डोंबिवली।

तेरापंथ भवन में साध्वी संयमलता जी, साध्वी मार्दवश्री जी, साध्वी मनीषाप्रभा जी, साध्वी रौनकप्रभा जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा गुलदस्ता दोस्ती और अपनत्व की शान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र व महिला मंडल की बहनों द्वारा सुमधुर मंगलाचरण से हुई। महिला मंडल, डोंबिवली की संयोजिका किरण कोठारी ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

साध्वी मनीषाप्रभा जी व साध्वी रौनकप्रभा जी ने सुमधुर गीत, मीना धाकड़ ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी मार्दवश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया।

तारक मेहता का उल्टा चश्मा के द्वारा महिला मंडल व कन्या मंडल ने रोचक प्रस्तुति दी। नवनिर्वाचित तेममं, मुंबई की मंत्री अलका मेहता ने ८१वें जन्मदिवस की साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी को शुभकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी संयमलता जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि मातृहृदया प्रमुखाश्री जी के ८१वें जन्मोत्सव पर हम कामना करते हैं कि ८१ के आगे एक और शून्य लग जाए, इतना बड़ा आयुष्य हो जिससे हमारा महिला समाज नित नवीन ऊँचाई छुए और आपकी अनुकंपा हम सब पर बनी रहे।

हरियाली अमावस्या के उपलक्ष्य में १८ बहनें घर से नाश्ता तैयार करके लेकर आईं और कुकिंग प्रतियोगिता रखी। निर्णायक के रूप में लीला पटवारी एवं उर्वी वीरा ने बखूबी से निर्णय निकालते हुए प्रथम नैना कच्छारा, द्वितीय रीना कोठारी, प्रेक्षा ढिलीवाल, तृतीय कविता कोठारी, प्रोत्साहन पिंकी गुंदेचा रहे। कार्यक्रम में विमला कोठारी, सरोज सिंघवी, जुली मेहता, पूर्व संयोजिका बहनें मार्गदर्शक, परामर्शक सभी बहनें उपस्थित रहीं। संचालन सह-संयोजिका करिश्मा कोठारी, कोषाध्यक्ष कुसुम बड़ाला व आभार ज्ञापन सह-संयोजिका सरोज इंटोदिया ने किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मान समारोह

साउथ हावड़ा।

सभा भवन में पंचशील, विक्रम विहार, श्री अपार्टमेंट और विवेक विहार ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं को उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के लिए सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में चयनित ज्ञानार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण ज्ञानार्थियों द्वारा किया गया। साउथ हावड़ा, सभा के ट्रस्टी राजेंद्र सुराणा एवं कोषाध्यक्ष सुशील सुराणा की गरिमामय उपस्थिति रही। ज्ञानशाला संयोजक मालचंद भंसाली ने अपने वक्तव्य से सभी को विशेष प्रेरणा दी। सह-संयोजिका अंजु चोरड़िया ने अपने विचारों को सभी के समक्ष रखा।

कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका लक्ष्मी गीड़िया ने किया। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका ऋतु बांठिया ने किया। मंगलपाठ के वाचन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम

दिल्ली।

ज्ञानशाला दिवस पर दिल्ली ज्ञानशाला द्वारा आयोजित इस महनीय उपक्रम में ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने 'ज्ञानशाला-सद्संस्कारों की शाला' विषय पर प्रकाश डालते हुए ज्ञानशाला, दिल्ली की कार्यशैली की प्रशंसा की। राष्ट्रीय ज्ञानशाला समिति के सदस्य सुरेंद्र लुनिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष जोधराज बैद, दिल्ली सभा महामंत्री डालमचंद बैद, केंद्रीय संचालन समिति की सदस्या सरोज छाजेड़, परामर्शक मनफूल बोथरा, आंचलिक सह-संयोजक एवं दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक अशोक बैद, क्षेत्रीय संयोजक सुशील डागा, तेमम मंत्री यशा बोथरा ने अपने भाव व्यक्त किए।

मुख्य कार्यक्रम क्विज प्रतियोगिता का 'कौन बनेगा जीनियस ज्ञानवान ज्ञानार्थी' की थीम पर तीन ग्रुप में संचालित हुआ जिसमें करीबन ५:३० घंटे से ज्यादा चले रोचक और गरिमामय कार्यक्रम में करीबन ५३७ प्रशिक्षिकाओं, कार्यकर्ताओं और ज्ञानार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

दिल्ली ज्ञानशाला केंद्रों के व्यवस्थापक गण, मुख्य प्रशिक्षिकागण, प्रशिक्षिकाओं, कार्यकर्ताओं, प्यारे-प्यारे, नन्हे-नन्हे ज्ञानार्थियों एवं दिल्ली के अभिभावकगण और श्रावक समाज ने अपना अनमोल समय, सहयोग और समर्पण भाव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम क्विज प्रतियोगिता तीन चरणों में संपादित हुई।

कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजक महेंद्र कुमार श्यामसुखा एवं सह-संयोजिका जय राखेचा ने किया एवं तीनों चरणों की क्विज को संचालित करने में सह-संयोजिका राजुल मनोत, एकता मनोत एवं नेहा मनोत का सहयोग रहा।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सम्मान समारोह

साउथ हावड़ा।

ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया की प्रेरणा से सभा भवन में राघव रेजिडेंसी, दे रोड और सभा भवन ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं को उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में चयनित ज्ञानार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ क्षेत्रीय सह-संयोजिका मनीषा सुराणा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सम्मुच्चारण से हुआ। मंगलाचरण ज्ञानार्थियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभा के ट्रस्टी अशोक कोठारी, अध्यक्ष सुशील गीड़िया एवं ज्ञानशाला संयोजक मालचंद भंसाली ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

महिला मंडल अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया एवं ज्ञानशाला सहसंयोजिका अंजु चोरड़िया ने प्रेरणा दी। उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया।

अध्यक्ष ने सभी प्रशिक्षिकाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षिका मनीषा सुराना, कमलेश लुनिया, विनीता पुगलिया ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका अंजु चोरड़िया व जयश्री सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका हेमलता बेगवानी ने किया। मंगलपाठ के वाचन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जैन विद्या कार्यशाला

जीन्द।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में तेयुप के तत्त्वावधान में जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने तीन प्रकार के शल्य-माया शल्य, निदान शल्य, मिथ्यात्व शल्य के ऊपर चर्चा करते हुए कहा। मायावी व्यक्ति माया करके गहन कर्मों का बंध करता हुआ अधोगति को प्राप्त होता है। निदान करने वाला व्यक्ति निदान करने से अपनी तपस्या के फल को बेच देता है तथा निर्जरा नहीं कर पाता। मिथ्यात्वी व्यक्ति अज्ञान के वशीभूत होकर सही-गलत ही पहचान नहीं कर पाता, जिससे वह पाप क्रिया को प्रोत्साहन देता है।

कार्यशाला का संचालन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया। महाराज द्वारा कार्यशाला से संबंधित प्रश्न भी पूछे गए। सही जवाब देने वालों को तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कांता मित्तल, नारायण सिंह रोहिल्ला, डॉ० अनिल जैन, डॉ० सुरेश जैन, श्रीचंद जैन, राजकिशन जैन, राजेश जैन, आशु जैन उपस्थित रहे।

टीकाकरण शिविर

रायपुर।

तेरापंथ अमोलक भवन, सदर बाजार में कोविड-१९ निःशुल्क टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ६८ सदस्यों ने कोविशील्ड वैक्सीन का प्रथम/द्वितीय डोज लगवाया। शिविर का आयोजन तेयुप द्वारा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, तेरापंथी सभा व किशोर मंडल के सहयोग से किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

बारह व्रत कार्यशाला के विविध आयोजन

किशोर मंडल द्वारा कार्यशाला का आयोजन

बैंगलुरु।

तेयुप के तत्त्वावधान में किशोर मंडल की कार्यशाला 'जीवन में सामायिक पहचान' तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक मंगलाचरण द्वारा हुआ। किशोर मंडल प्रभारी पंकज मांडोत ने सभी का स्वागत किया। परिचय सत्र के साथ कार्यशाला आरंभ हुई। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने किशोरों को प्रेरणा दी कि सभी किशोर मंडल और तेयुप की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ें और स्वयं का एवं समाज के विकास में सहभागी बनें।

साध्वी लावण्यश्री जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। संस्कारक व तेयुप परामर्शक जितेंद्र घोषल ने सभी किशोरों को आयु अवस्था से ही जैन संस्कार विधि सीखने के लिए प्रेरित किया। जय कोठारी, पीयूष नाहर, गगन संचेती सहित कई साथी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संयोजक जतिन बोराणा ने किया व सभी का आभार सह-संयोजक चिराग मांडोत ने किया।

बारह व्रत कार्यशाला

जिन्द।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन रखा गया। मंगलाचरण राजेश जैन ने किया। मंत्री कुणाल मित्तल ने कार्यशाला के विषय में विचार प्रस्तुत किए। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि जिनशासन के चार अंग हैं—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। श्रावक जिन शासन के अभिन्न अंग होते हैं। भगवान महावीर ने कहा कि धर्म के दो प्रकार हैं—अणगार धर्म, आगार धर्म। श्रावक आगार धर्म को स्वीकार करता है, वह व्रताव्रती धर्माधर्मी, संयमासंयमी होता है। जितना त्याग करता है उतना धर्म है। श्रावक वह होता है जो श्रा अर्थात् श्रद्धा, व यानी विवेक, क यानी क्रिया जो श्रद्धा से विवेकपूर्ण क्रिया करता है। श्रावक की पहली विशेषता है श्रद्धाशीलता, देव, गुरु, धर्म के प्रति घनिभूत आस्था।

दूसरी विशेषता विश्वासपात्रता उसके व्यवहार व्यवसाय आदि में प्रमाणिकता, तीसरी विशेषता प्रयोग-धर्मिता साधना के नए-नए प्रयोग करते रहना। अव्रत से व्रत असंयम से संयम की ओर प्रस्थान करना जीवन जागृति का अभ्यास करना व्रतों से जीवन का परिष्कार होता है। साध्वीश्री जी ने उपस्थित श्रोताओं को बारह व्रतों को विस्तार से समझाया, सभी को यथाशक्य संकल्प करवाया। आभार ज्ञापन अध्यक्ष आशु जैन ने किया। अंत में श्रावक गीत का संगान किया।

बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला

नोहर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। व्रतों का विवेचन करते हुए शासन मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि जैन संस्कृति में व्रतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। भगवान महावीर ने साधुओं के लिए पाँच महाव्रत बताए और सामान्य गृहस्थ के लिए बारह व्रतों की बात कही। बारह व्रत में हर व्रत की अपनी अलग-अलग विवक्षा है। इन सात दिनों में एक-एक व्रत विवेचन किया गया। इन्हें भार नहीं, अमूल्य उपहार समझकर हर कोई स्वीकार करे।

अभातेयुप ने एक अच्छा उपक्रम प्रारंभ किया है, युवक इन्हें स्वीकार करें तो इस उपक्रम की यह एक विशेष निष्पत्ति कही जाएगी। शासनश्री ने गीत से कार्यशाला का प्रारंभ किया। स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री चंद्रेश सिपानी और सहमंत्री चंदन छाजेड़ ने संभागी भाई-बहनों को बारह व्रत की पुस्तिका वितरित की। शासनश्री ने संभागियों से कहा—वे एक-एक व्रत को समझकर अपनी सीमा तय करके व्रतों को स्वीकार करें और स्वयं भी बारह व्रती श्रावक के रूप में पहचान बनाएँ।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेयुप द्वारा आयोजित बारह व्रत कार्यशाला का आगाज सभा भवन में विराजित साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर अध्यक्ष अमित दक ने उपस्थित सभी श्रावकों का स्वागत किया। साध्वीश्री जी ने बारह व्रत की अपने जीवन में महत्ता बताते हुए कहा कि पहला व्रत है—अहिंसा अणुव्रत, श्रावक की दिनचर्या में अनेक तरह के कार्य होते हैं, तो उन्हें बहुत जगह आना-जाना, कमाना, समाज, परिवार, व्यवसाय में कभी भी जाने या अनजाने में हिंसा हो सकती है। साध्वीश्री जी ने कहा कि कभी भी किसी भी निरपराध प्राणी की संकल्पपूर्वक हत्या नहीं करूँगा का संकल्प भी करवाया।

इस अवसर पर बारह व्रत कार्यशाला संयोजक संजय भटेवरा ने उपस्थित सभी श्रावकों को बारह व्रत की पुस्तक एवं फार्म वितरण महिला मंडल के सहयोग से किया। इस अवसर पर तेयुप उपाध्यक्ष-द्वितीय प्रवीण गन्ना, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा एवं महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम बाई भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया उपस्थित रही।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला एवं अणुव्रत समिति का शपथ ग्रहण समारोह

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में तेरापंथ सभा भवन में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला एवं शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जो व्यक्ति संगठन, संस्था से जुड़कर समाज की सेवा करता है, संस्था को चिरंजीवी बनाता है, वह कार्यकर्ता कहलाता है। संगठन व्यक्ति की योग्यता में निखार का माध्यम बनता है। उससे उसकी प्रतिभा बढ़ती है, उसकी मूल्यवत्ता बढ़ती है।

साध्वीश्री जी ने नवमनोनीत अणुव्रत समिति की टीम के आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना के साथ कहा कि गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का अणुव्रत रूपी महान अनुदान जनसाधारण के चारित्रिक विकास में बहुत सहभागी बन रहा है। साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी के पंचशील—श्रद्धाशील, चिंतनशील, सहनशील, श्रमशील और चारित्रशील इन सिद्धांतों को अपनाने वाला एक सफल कार्यकर्ता बन सकता है।

गौतमचंद सेठिया ने नवगठित टीम का परिचय देते हुए संघीय संस्थाओं की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की। पूर्वाध्यक्ष संपतराज चोरड़िया ने टीम को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ललित आंचलिया ने सभी सदस्यों के सहकार और सहयोग से अपने कार्यकाल में संपादित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मंगलाचरण अणुव्रत सदस्यों ने एवं आभार ज्ञापन मंत्री अरिहंत बोथरा ने किया। कार्यशाला के प्रायोजक बाबूलाल विजयकुमार बडाला मनली, चेन्नई परिवार का अणुव्रत समिति द्वारा सम्मान किया गया। कार्यशाला में अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश बोहरा, तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में पूर्वाध्यक्ष माला कातरेला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मादावरम तेरापंथ ट्रस्ट द्वारा अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया एवं टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़ का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन पंकज चौपड़ा ने और मंच संचालन स्वरूपचंद दांती ने किया।

वृक्षारोपण एवं संरक्षण कार्यक्रम

गुवाहाटी।

अणुव्रत समिति ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्थानीय गोपीनाथ नगर स्थित इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट परिसर में वृक्षारोपण एवं संरक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान एवं अणुव्रत गीत के साथ हुआ। अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने अपने स्वागत भाषण में सभी का स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम में समागत विशिष्ट अतिथि के रूप में आईटीआई के वरिष्ठ प्रिंसिपल एन०एस० मजूमदार का स्वागत सम्मान फुलाम गमछा एवं अणुव्रत आचार संहिता मोमेंटो प्रदान कर किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित तेरापंथी सभा अध्यक्ष झंकार दुधोड़िया, तेमम अध्यक्ष मंजु भंसाली, तेयुप अध्यक्ष आशीष कोचर, टीपीएफ अध्यक्ष रामचंद्र संचेती, तेरापंथ महासभा के पूर्वोत्तर प्रभारी बसंत सुराणा, मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा कंचन केजरीवाल, अनुदानदाताओं का फूलाम गमछा से अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति के सदस्यों के साथ अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निवर्तमान अध्यक्ष छतरसिंह चोरड़िया, मंत्री पवन जम्मड़, उपाध्यक्ष बजरंग बैद, कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया, सहमंत्रीद्वय अशोक बोरड़ व जयकुमार भंसाली, कार्यकारिणी सदस्य प्रकाश गोलछा सहित समिति के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

अभिनंदन कार्यक्रम

भिवानी।

शासनश्री साध्वी तिलकश्री जी के सान्निध्य में समणी शीलप्रज्ञा जी के श्रेणी आरोहण के उपलक्ष्य में अभिनंदन कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया। साध्वी तिलकश्री जी ने कहा कि संयम एक अमूल्य हीरा है और इस हीरे का सदुपयोग किया जाए तो मुक्ति की मंजिल हमारे लिए दूर नहीं है। संयम की यात्रा भुजाओं से सागर तैरने के समान है। अपने पुरुषार्थ के द्वारा ही अपनी मंजिल मिलती है। उन्होंने कहा कि मैं आपके प्रति मंगलकामना करती हूँ तुम संयम के पथ पर ध्रुव तारे की तरह अविचल रहना और दिन-दूनी रात चौगुनी प्रगति करना।

साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। समणी शीलप्रज्ञा जी ने कहा कि श्रेणी आरोहण करना एक विकास का पथ है। हर इंसान श्रेणी आरोहण करना चाहता है। समणी कांतिप्रज्ञा जी ने कहा कि समणी शीलप्रज्ञा जी शांत स्वभावी एवं तपस्वी हैं। इनकी मिलनसारिता भी बेजोड़ है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। ट्रस्ट के अध्यक्ष सुभाष जैन, सभा अध्यक्ष महेंद्र जैन, महिला मंडल अध्यक्षा सुनीता नाहटा, रेणु नाहटा, तेयुप अध्यक्ष नवीन नाहटा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल, केशव जैन, माणकचंद नाहटा, अंजू वडेरा आदि ने अभिनंदन के लिए विचार प्रस्तुत किए। मंच का संचालन उपासक रमेश जैन ने किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तत्त्वज्ञान कार्यशाला

राजलदेसर।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में 'तत्त्वज्ञ बनो- कार्यशाला' का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में टेंशन, डिप्रेशन होता है तो उसे टॉनिक चाहिए, वह है तत्त्वज्ञान। तत्त्वज्ञान मन का कायाकल्प करता है। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। साध्वी परिवार की सामुहिक गीतिका हुई।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने वर्कशॉप में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यशाला में भाई-बहनों ने अच्छी संख्या में उपस्थित होकर उसे सफल बनाया। जिज्ञासा संबंधी प्रश्न-उत्तरों का रोचक प्रसंग चला। अनेक भाई-बहनों ने भाग लेकर सेमिनार को रोचक, ज्ञानप्रद और लाभकारक बनाया।

सेवा कार्य : वृद्धाश्रम में राशन सामग्री भेंट

बेहाला।

तेयुप ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सेवा कार्य और ध्वजारोहण कार्यक्रम शांति निवास (वृद्धाश्रम) में आयोजित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात वृद्धाश्रम की संयोजिका रीना सेन ने ध्वजारोहण किया। उपस्थित सभी महानुभावों ने राष्ट्रगान का संगान किया। तेयुप ने वृद्धाश्रम को उनके दैनिक जरूरत के अनुसार राशन सामग्री भेंट की। परिषद के युवकों ने उत्साह के साथ सेवा कार्य में अपनी सहभागिता दर्ज कराई एवं कार्य को सफल बनाया। इस कार्य के प्रायोजक ऋषभ बरमेचा थे।

आओ याद करें वीरों को

दिल्ली।

तेयुप द्वारा ७५वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर 'आओ याद करें वीरों को' देशभक्ति गीतों का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन का आयोजन ओसवाल भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का वर्चुअल प्रसारण फेसबुक के माध्यम से भी किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप परामर्शक व अणुविभा के संयुक्त मंत्री इंद्र बैंगाणी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। पवन श्यामसुखा, अशोक सिंघी, रितेश मालू एवं प्रवीण बैद ने विजय गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष विकास बोथरा ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित कवि राजेश चेतन, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि अनिल अग्रवंशी एवं देश की जानी-मानी कवियत्री बलजीत कौर ने सुमधुर काव्यपाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। दिल्ली के संगायक व संगायिकाओं–विमल गुनेचा, संजय भटेरा, विकास सिंघी, राहुल बैद, ईशान नौलखा, प्रीति-महक श्यामसुखा एवं तेयुप सांस्कृतिक प्रभारी रितेश मालू ने अपने सुमधुर गीतों से वातावरण को देशभक्तिमय बना दिया।

कार्यक्रम में अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य जतन श्यामसुखा, संजय संचेती, दिल्ली सभा के संगठन मंत्री अशोक संचेती, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ एवं अन्य पदाधिकारी, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, मंत्री सुरेश भंसाली, गांधीनगर सभा के उपाध्यक्ष अनिल पटवा, विकास मंच के ट्रस्टी सचिव दिनेश डूंगरवाल, दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक अशोक बैद, टीपीएफ के मंत्री अंकित श्यामसुखा, कार्यक्रम के प्रायोजक प्रभात खटेड़, समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों सहित तेयुप के सदस्य एवं पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमामय बनाया।

बड़ी संख्या में श्रावक समाज एवं तेयुप कार्यकर्ताओं ने फेसबुक के माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम का संचालन हेमराज राखेचा ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सौरभ आंचलिया ने किया। कार्यक्रम के संयोजक मनीष महनोत, सांस्कृतिक प्रभारी रितेश मालू, संगठन मंत्री मयंक दुगड़, क्षेत्रीय संयोजक पवन पारख एवं अनेक कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय श्रम रहा। कार्यक्रम हेतु अर्थ सौजन्य मातुश्री किरण देवी कमल सिंह खटेड़ परिवार से प्राप्त हुआ।

'लेट्स बिगनिंग' गोष्ठी का आयोजन

भुज।

तेयुप के अंतर्गत कार्यशील तेरापंथ किशोर मंडल, भुज का नए सत्र का प्रथम कार्यक्रम लेट्स बिगनिंग गोष्ठी का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। नमस्कार महामंत्र से गोष्ठी का शुभारंभ हुआ। किशोर मंडल के नवनियुक्त संयोजक यश केतन दोशी ने तेयुप प्रबंध मंडल एवं किशोर मंडल के साथियों का स्वागत किया। तेयुप संगठन मंत्री एवं अभातेयुप समिति सदस्य आदर्श संघवी तथा किशोर मंडल प्रभारी मितुल मेहता ने किशोर मंडल को मार्गदर्शित कर नई ऊर्जा का संचार किया।

तेयुप, भुज के अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने किशोर का महत्त्व समझाते हुए किशोर मंडल को नई प्रेरणा प्रदान की। आभार ज्ञापन किशोर मंडल सह-संयोजक वैभव देवेंद्र गांधी मेहता ने किया। कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल सह-संयोजक देवांश पीयूष दोशी ने किया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मानवता की मिशाल - रक्तदान

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप एवं तेरापंथ टास्क फोर्स द्वारा नेशनल डिजास्टर रिस्पांस कोर्स के सहयोग से इस सत्र का प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन एनडीआरएफ के सेकेंड बटालियन वीआईपी रोड, बागुईहाटी स्थित कैंप में किया गया। जिसमें कुल ७५ रक्तदाताओं ने अपना बहुमूल्य रक्तदान करके समाज के सामने मानवता की मिसाल प्रस्तुत की।

तेयुप के अध्यक्ष विकास सिंघी ने अपने वक्तव्य में उपस्थित चीफ गेस्ट एनडीआरएफ द्वितीय बटालियन के कमांडेंट गुरमीत सिंह एवं उनकी पूरी टीम का स्वागत किया। अपने वक्तव्य में आगे भी ऐसे रक्तदान शिविर एनडीआरएफ के साथ करने की पेशकश की।

शिविर में तेरापंथ टास्क फोर्स के राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा, जिन्होंने स्वयं रक्तदान कर एक मिसाल पेश की। इस शिविर को सफल बनाने में मुख्य भूमिका रही उसमें अभातेयुप मेगा ब्लड डोनेशन के राष्ट्रीय सहप्रभारी यश रामपुरिया, उपाध्यक्ष और परिषद के एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, उपाध्यक्ष 'द्वितीय' धर्मेन्द्र बुच्चा, मंत्री लोकेश गोलछा, सहमंत्री धीरज मालू, यश दुगड़, संगठन मंत्री नवीन दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, एमबीडीडी संयोजक व परिषद के कार्यसमिति सदस्य रवि दुगड़, तेरापंथ टास्क फोर्स के राज्य प्रभारी अजय पींचा, संस्थापक अध्यक्ष रतनलाल श्यामसुखा सहित अनेक सदस्यगण विशेष उपस्थित रहे।

तेयुप ने राष्ट्रीय आपदा मोचन बल के प्रति विशेषकर कमांडेंट गुरमीत सिंह, सेकैंड इन कमांड विश्वनाथ पराशर जिन्होंने स्वयं रक्तदान भी किया। साथ ही सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर

जयपुर।

तेयुप द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों की शृंखला के अंतर्गत सत्र-२०२१-२२ में प्रथम रक्तदान शिविर का आयोजन उत्तर-पश्चिम रेलवे जयपुर मंडल के परिसर में किया गया। तेयुप के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ के नेतृत्व में जयपुर मंडल में नियुक्त सभी कर्मचारियों से रक्तदान करने के आग्रह पर संयोजकों के प्रयास से बढ़-चढ़कर रक्तदान हुआ।

उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर मंडल के पदाधिकारियों में जयपुर स्टेशन डायरेक्टर गुलाबचंद गुप्ता, डीएससी आरपीएफ कमांडेंट ज्योति मणी का स्वागत परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने पचरंगा ओढ़ाकर व साहित्य भेंट कर किया।

तेयुप मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि कार्यक्रम में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय संयोजक हितेश भांडिया, तेयुप के सहमंत्री सौरभ पटावरी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। शिविर में रक्त का संग्रहण जयपुरिया ब्लड बैंक के द्वारा किया गया। शिविर में कैब ड्राइवरों ने भी रक्तदान करने के प्रति विशेष जागरूकता दिखाई। शिविर का आयोजन बिमला दुगड़ (कांतिकुमार दुगड़ मेमोरियल ट्रस्ट) के प्रायोजकत्व में किया गया।

दायित्व बोध कार्यशाला

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा दायित्व बोध कार्यशाला साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के मंगल मंत्रोच्चार से प्रारंभ हुई। प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। तेयुप के अध्यक्ष विनय बैद ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने युवकों को प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया। मुख्य वक्ता तेयुप के पूर्व अध्यक्ष दीपक गोठी ने बताया कि तेयुप गणाधिपति तुलसी के सपनों की संस्था है व तेयुप से युवा साथियों को मिलती है पहचान। अध्यक्ष लक्ष्मीपत मालू ने व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन पर अपने विचार रखे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश दक, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना, तेयुप हनुमंतनगर अध्यक्ष धर्मेश कोठारी, अभातेयुप नेत्रदान सहप्रभारी नवनीत मूथा ने अपने विचार व्यक्त किए।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष रणजीत, राखेचा मंत्री प्रदीप भंसाली सहित कार्यकारिणी सदस्यगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रसन्न धोका ने किया। व संयोजक अंकित छाजेड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षाध्यान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

तेयुप के तत्त्वावधान में मुनि धर्मेश कुमार जी सहवर्ती मुनि डॉ० विनोद कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी के सान्निध्य में कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान व्यक्तित्व विकास की महत्त्वपूर्ण प्रणाली है। साथ में मुनिश्री द्वारा सामान्य श्वास, दीर्घ श्वास, लय श्वास, प्रेक्षाध्यान का प्रयोग, महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग सहित कई प्रयोग करवाए गए।

मंत्री दिनेश वडेरा ने कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में ५० संभागी भाग ले रहे हैं। अंत में सभी संभागियों को प्रथम दिवस कार्यशाला में अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यशाला के संयोजक तरुण भंसाली ने बताया कि इस कार्यशाला में ईश्वरचंद ललित कुमार भंसाली, हुलासचंद अरिहंत कुमार सालेचा, अशोक कुमार सुरेश कुमार सालेचा, मांगीलाल नेमीचंद संखलेचा, रावतमल गणपत लाल तातेड़, धनराज राकेश कुमार कंकु चौपड़ा, गणपत लाल कल्पेश कुमार लुंकड सहित प्रायोजक के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान की। तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत ने आभार ज्ञापित किया।

भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी

बालोतरा।

ज्ञानशाला हमारे धर्मसंघ का उपयोगी उपक्रम है। जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है ऐसा जीवन ही मूल्यवान माना जाता है जो अच्छे संस्कारों से पल्लवित हुआ हो।

साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि भौतिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। सभी अभिभावकों से अनुभव सुने। ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश वैदमूथा, सह-संयोजक राजेश बाफना, तेयुप के अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा, महिला मंडल की अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, मंत्री संगीता बोथरा, मुख्य प्रशिक्षक उर्मिला सालेचा व अन्य प्रशिक्षक तथा अभिभावकगण उपस्थित थे। संचालन ज्ञानशाला संयोजिका विमला संकलेचा ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर रक्तदान

विजयनगर।

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर तेयुप ने युवा दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर ४ कॉलेजों में रक्तदान पर चित्रकला पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों युवाओं ने भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ० महेश कुमार (जिला एड्स नियंत्रण अधिकारी, कर्नाटक सरकार), नंजेगौड़ा (सहायक निदेशक -एड्स नियंत्रण, कर्नाटक सरकार) एवं कर्नाटक सरकार के कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। डॉ० महेश कुमार ने बताया कि तेयुप विजयनगर जैसी संस्थाओं पर हमें नाज है, जो रक्तदान जैसे जनोपयोगी कार्य कर रहे हैं। ऐसी संस्थाओं को आगे आना चाहिए।

तेयुप एवं पूर्व अभातेयुप संगठन मंत्री पवन मांडोत ने अभातेयुप एवं तेयुप की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने तेयुप, विजयनगर को कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर कार्य करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद प्रेषित किया। इस अवसर पर तेयुप मंत्री विकास बांठिया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना उपस्थित थे। सभी का सम्मान किया गया।

फिट युवा-हिट युवा

गंगाशहर।

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर किशोर मंडल द्वारा किशोरों में बढ़ते आक्रोश को नियंत्रण करने के लिए प्रेक्षाध्यान के कुछ प्रयोग किए एवं फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत शारीरिक और मानसिक तनाव को दूर करने के लिए विभिन्न योग व व्यायाम किए। कई तरह की खेल प्रतियोगिता आयोजित की। सामुहिक गीत का संगान किया गया। अंत में मुनि शांति जी से नशामुक्ति का संकल्प भी लिया।

संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने किशोरों का उत्साह बढ़ाया और कहा कि युवा वो होता है जो बिना अतीत की चिंता किए अपने भविष्य के लक्ष्यों की दिशा में काम करता है। इस अवसर पर संयोजक कुलदीप छाजेड़, सह-संयोजक दीपेश बैद, रौनक चोरड़िया, चेतन रांका, गुनित आंचलिया, ऋषभ संचेती, हर्ष छाजेड़, जयंत चोपड़ा, विनोद जैन, मुदित सेठिया, प्रियांश सेठिया, जयंत गोलछा, तरुण जैन, संदीप रांका, सौरभ जैन, चेतन बोथरा, मुदित ललवाणी, पवन रांका, दीक्षित लोढ़ा उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *धर्माचरण के द्वारा मनुष्य जन्म का लाभ उठाया जा सकता है तथा मोक्ष की ओर गति की जा सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

बैंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा बैंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'कर्तव्य बोध - मेरी परिषद-मेरा दायित्व' की अभातेयुप के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना की अध्यक्षता में शुरुआत हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात विजय गीत का संगान विजय स्वर संगम के साथियों के द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष एवं कार्यशाला के मुख्य वक्ता विमल कटारिया द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने स्वागत वक्तव्य में परिषद द्वारा किए गए कार्य एवं आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

इस अवसर पर सभी को कार्यशाला किट का वितरण भी किया गया। मुख्य वक्ता अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि कार्यकर्ताओं को अपना विजन क्लियर रखना चाहिए। परिषद के अध्यक्ष से लेकर हर एक सदस्य को अपने कर्तव्य का बोध होना जरूरी है। हर सदस्य को परिषद के प्रति अपने दायित्व को समझना चाहिए।

अभातेयुप से पवन मांडोत ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोरखना ने कहा कि अगर हम छोटी बातों का ध्यान रखें तो आप सभी अपने दायित्व का निर्वाह अच्छे तरीके से कर सकते हैं, संगठन में तीन बातों का ख्याल रखना चाहिए। सभी को साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। सभा अध्यक्ष राजेश चावत, महिला मंडल से प्रेमबाई भंसाली ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार से सतीश पोरवाड़, गौतम खाब्या, राकेश दक एवं परिषद के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, अभिषेक कावड़िया, महावीर टेबा, उपाध्यक्ष प्रथम मनोज बरड़िया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, हितेश भटेवरा, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना, संगठन मंत्री दीपक भूरा, गांधीनगर परिषद से अध्यक्ष विनय बैद, राजाजीनगर से अध्यक्ष मनोज मेहता, हनुमंतनगर से धर्मेश कोठारी एवं आर०आर० नगर से अध्यक्ष सुशील भंसाली एवं उनकी टीम उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विकास बांठिया एवं आभार सहमंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।

शुद्ध पेय जल सेवा का शुभारंभ

कोकराझार।

तेयुप द्वारा स्थायी शुद्ध पेय जल परिकल्पना का आरएनबी सिविल हॉस्पिटल में मुख्य अतिथि बीटीआर चीफ प्रमोद बोरो द्वारा उद्घाटन किया गया। बोरो ने उद्घाटन के उपरांत अपने वक्तव्य में तेयुप की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैन समाज मानव के कल्याण एवं सामाजिक सेवाएँ प्रदान करने में अग्रणीय समाज है। उन्होंने कहा कि जल ही जीवन है, आज आपने अस्पताल में आवश्यक जल सेवा को प्रदान कर मानवता का महान कार्य किया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष सुमित सेठिया ने अपने स्वागत भाषण द्वारा पधारे हुए सभी आगंतुकों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि, कोकराझार म्यूनिसिपल बोर्ड की चेयरपर्सन प्रतिभा ब्रह्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि आपका समाज सेवा के प्रति गहरा लगाव देखकर आप सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। विशेष अतिथि आरएनबी सिविल हॉस्पिटल के सुपरिंटेंडेट ए०एस० शर्मा ने कहा कि तेयुप ने इस प्रकल्प को अस्पताल प्रांगण में स्थापित कर हमारी बहुत बड़ी आशा को मूर्त रूप दिया है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

कार्यक्रम में प्रेस क्लब कोकराझार की अध्यक्षा मोनालिसा शर्मा एवं तेरापंथी सभा के सचिव कन्हैयालाल चोपड़ा तथा वार्ड कमिश्नर राजेश बोथरा ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेममं, राजस्थान पंचायत समिति, मारवाड़ी युवा मंच, जागृति शाखा तथा मारवाड़ी समाज के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष विजय भूरा ने किया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन तेयुप के सचिव राज कुमार बोथरा ने किया।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर

गांधीनगर-बैंगलोर।

प्रेक्षा फाउंडेशन, जैन विश्व भारती, लाडनूं के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान केंद्र राजाजीनगर के सहयोग से तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में दो दिवसीय शिविर का शुभारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि मुझे स्वयं को भी प्रेक्षाध्यान में काफी रुचि है। इस तरह के शिविरों में संतुलित जीवनशैली का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

बाहर से भीतर की ओर आना है। प्रेक्षाध्यान अपने आपको समझने की प्रक्रिया है। इसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास करना है। स्वयं के द्वारा स्वयं को देखने की प्रक्रिया का नाम है–प्रेक्षाध्यान।

साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित गीत का संगान किया। रेणु कोठारी ने प्रेक्षा प्रशिक्षक टीम से सबका स्वागत किया। सभा उपाध्यक्ष महावीर धोका ने सभी का स्वागत किया। शिविर के मुख्य प्रशिक्षक डालमचंद सेठिया के नेतृत्व में रेणु कोठारी व पूजा गुगलिया प्रशिक्षक के दायित्व पर हैं। शिविर व्यवस्था में नीतेश धारीवाल, धनराज डूंगरवाल व संयोजक राजेंद्र बैद का विशेष श्रम लगा। इस शिविर के प्रायोजक पर्वत, सुमन, महावीर, सुखलेचा ज्ञानगढ़, जिगनी हैं।

इस अवसर पर सभा कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद व रूपचंद देसरला विशेष उपस्थित रहे। संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया।

सेवा कार्य : वृद्धाश्रम में भोजन व्यवस्था

बारडोली।

तेयुप के मार्गदर्शन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा सेवा-संस्कार और संगठन के त्रिआयामी बिंदुओं को चरितार्थ कर तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा वृद्धाश्रम में सेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत समस्त वृद्धजनों को भोजन करवाया गया एवं उनके साथ समय व्यतीत किया गया।

कार्यक्रम में संयोजक नील दक, सह-संयोजक मनन बड़ौला, संयम बड़ोला, राज कोठारी, रौनक कोठारी, जयेश मेहता, उत्सव मेहता, हर्ष दक आदि किशोर उपस्थित रहे।

तेयुप बारडोली के अध्यक्ष साहिल बाफणा ने कार्यक्रम के प्रति किशोर मंडल का आभार ज्ञापन किया।

नि:शुल्क कोविड-१९ टीकाकरण शिविर

जयपुर।

तेयुप व अणुविभा के द्वारा मालवीय नगर स्थित अणुविभा केंद्र में नि:शुल्क कोविड-१९ टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ मंगलाचरण के संगान से एवं तेयुप के प्रथम अध्यक्ष महावीर चंद भंडारी को वैक्सीन लगाकर किया गया।

तेयुप, जयपुर के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि शिविर में विशिष्ट अतिथि भारतीय जनता पार्टी राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया एवं मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर नगर निगम ग्रेटर के उपमहापौर पुनीत कर्णावट व श्रीराम आशापूरण चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी नवीन भंडारी, सभी अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़ एवं अणुविभा केंद्र के मंत्री हितेश भांडिया ने किया।

तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि शिविर में १८ वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिए कोवैक्सीन का दूसरा डोज जन-सामान्य को लगाया गया। शिविर में कुल ४५५ जनों को वैक्सीन लगाई गई। शिविर की आयोजना में अणुविभा, जयपुर केंद्र, तेयुप से संयोजक राज बी० गोलछा व अमित बांठिया, संगठन मंत्री प्रवीण जैन, कार्यसमिति सदस्य जय बोहरा, प्रवीण भूतोड़िया, भरत सेठिया, राजकुमार गोलछा, छवि बैंगानी, मनीष चोरड़िया के साथ अन्य सभी कार्यकर्ताओं का श्रम उल्लेखनीय रहा।

अमृत महोत्सव

गंगाशहर।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा कार्यक्रम तेरापंथ सभा गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी के ध्वजारोहण के साथ प्रारंभ हुआ। किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने बताया कि कार्यक्रम में गीतों, कविताओं, नृत्य और ओजस्वी भावों से वक्ताओं ने श्रोताओं को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। कोमल-एकता पुगलिया, प्रिया पारख, पवन छाजेड़, धरणेंद्र चोरड़िया, भव्य संचेती, प्रियंका छाजेड़, विपिन बोथरा, योगिता जैन, भव्य ललवाणी, गुणित आंचलिया ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, जैन महासभा अध्यक्ष जैन लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान महामंत्री हंसराज डागा, तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, महिला मंडल मंत्री कविता चोपड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष मिलाप चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए।

किशोर मंडल प्रभारी चंचल चोपड़ा ने बताया कि सह-संयोजक दीपेश बैद के नेतृत्व में किशोर साथियों ने अनेकता में एकता नाट्य प्रस्तुति दी। भाविनी संचेती ने अभिनय एवं टीम कन्या मंडल ने योगिता जैन की संयोजना में नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उपस्थिति अच्छी रही।

तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने किशोर मंडल द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की और सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में काव्या बच्छावत-प्रथम, यशस्वी छाजेड़-द्वितीय व लक्षिता बोथरा-तृतीय स्थान पर रहे। वीडियो प्रतियोगिता में रिमझिम तातेड़-प्रथम, गुणित आंचलिया-द्वितीय व योगिता जैन ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ऑनलाइन माध्यम से प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मोहित संचेती और मुदित ललवाणी द्वारा किया गया। तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने आभार ज्ञापित किया।

शपथ ग्रहण समारोह

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, चेन्नई की नवगठित कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में सभा भवन में आयोजित हुआ। किशोर मंडल की टीत ने विजय गीत के संगान के साथ मंगलाचरण किया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा ने उपस्थित गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया। किशोर मंडल के प्रभारी दिनेश बाफना ने कार्यसमिति सदस्यों का परिचय दिया।

किशोर मंडल संयोजक मयंक रांका, सह-संयोजक अनीश मरलेचा एवं सभी कार्यसमिति सदस्य एवं स्पेशल इनवाईटी को तेयुप, चेन्नई अध्यक्ष मुकेश नवलखा ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई।

इस अवसर पर साध्वी अणिमाश्री जी ने किशोर मंडल को संकल्प दिलाए। धन्यवाद ज्ञापन किशोर मंडल सहप्रभारी विशाल नाहर ने दिया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री संतोष सेठिया ने किया।

✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

सुरों के संग्राम - सरगम के द्वितीय सेमीफाइनल का आयोजन

चेंबूर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, चेंबूर की आयोजना में सरगम के द्वितीय सेमीफाइनल का भव्य आयोजन अंधेरी स्थित रेडिशन ब्लू होटल में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कार्यक्रम के विधिवत उद्घाटन की घोषणा की। तेयुप के अध्यक्ष मुकेश मांडोत ने सभी का स्वागत किया।

सरगम–सुरों के संग्राम के द्वितीय सेमीफाइनल राउंड में देशभर से समागत १३ युगल गायकों ने दो राउंड में अपनी-अपनी प्रस्तुति द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि सरगम के इस आयोजन ने देशभर की प्रतिभाओं को मंच देने का कार्य किया है और अनेकों प्रतिभाओं को संगीत के क्षेत्र में आगे लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अभातेयुप ने इस वर्ष सरगम में युगल प्रतिभागियों को समाहित कर समाज के समक्ष नया टेलेंटिड उपक्रम प्रस्तुत किया है। सरगम के राष्ट्रीय प्रभारी लकी कोठारी एवं सह-प्रभारी सुनील चिंडालिया ने सरगम के आयोजन की यात्रा के अनुभव साझा किए। राज्य प्रभारी अविनाश इंटोदिया ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त की। आभार ज्ञापन तेयुप, चेंबूर के मंत्री सुशील हिरण ने किया। कार्यक्रम का मंच संचालन संगायिका सोनल पीपाड़ा ने किया।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी सहित संपूर्ण प्रबंध मंडल एवं अभातेयुप साथीगण, तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष बी०सी० भलावत एवं निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेममं की महामंत्री तरुणा बोहरा सहित तेरापंथ समाज, मुंबई के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण पारस चैनल एवं अभातेयुप जैन तेरापंथ न्यूज के फेसबुक पेज व यू-ट्यूब के माध्यम से हुआ। जिसका अच्छा परितोष मिला।

सरगम के फाइनल में अपनी जगह बनाने वाले प्रतिभागियों में–अर्पित संचेती-अर्चना वैद्य-सूरत, आभा शाह-अंकित भोगर-सूरत, राजुल सुराणा-जीनल जैन-सूरत, उर्वशी चौपड़ा-दर्शन चौपड़ा-लुधियाना, जागृत कोठारी-झील कोठारी-केलवा, शुभम बरड़िया-चंद्र प्रकाश सेठिया-सरदारशहर रहे।

कार्यक्रम में मुख्य प्रायोजक संपतलाल, राजेश, नरेश सोनी का स्मृति चिह्न द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अभातेममं निवर्तमान अध्यक्षा कुमुद कच्छारा, तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई अध्यक्षा रचना हिरण एवं मंत्री अलका मेहता, अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्षा कंचन सोनी की विशेष उपस्थिति रही।

सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला

गदग।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा सात दिवसीय कार्यशाला कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का आयोजन स्थानक भवन में किया गया। सीपीएस कार्यशाला का शुभारंभ शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के मंगलपाठ से हुआ।

प्रथम दो दिवसीय चिराग पामेचा ने सभी को मंच पर खड़े होना, हाव-भाव, चेक लिस्ट आदि के बारे में विस्तार से बताया। अगले दो दिन बबीता रायसोनी ने सभी प्रतियोगियों को स्वागत-भाषण, आभार ज्ञापन, मुख्य वक्ता आदि के बारे में बारीक-बारीक जानकारियाँ दी। अंतिम तीन दिन में अनिता गांधी ने पिछले चार दिनों का पुनरावलोकन किया। पाँचवें दिन समूह बनाकर नाटक प्रस्तुति एवं वक्तव्य कला के गुर बताते हुए प्रस्तुति के लिए तैयार किया।

दीक्षांत समारोह

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में दीक्षांत समारोह रखा गया। कार्यक्रम के अध्यक्षता के रूप में दिनेश संकेलचा, मुख्य अतिथि स्तानकवासी समाज के अध्यक्ष रूपचंद पालरेचा, कर्नाटक अंगूर रस निगम के अध्यक्ष कांतिलाल भंसाली, विशेष अतिथि गदग शाखा प्रभारी राकेश दक, विशेष अतिथि सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, सीपीएस कार्यक्रम के संयोजक जितेंद्र जीरावला, तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, मंत्री कमलेश जीरावला और सीपीएस ट्रेनर अनिता गांधी की उपस्थिति में कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

तेयुप अध्यक्ष ने कार्यक्रम की शुरुआत की घोषणा की, मंगलाचरण, विजय गीत, श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। अध्यक्ष दिनेश संकलेचा ने सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि हमारा जीवन, स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र और कुल का परिचायक है, उसे बेहतर बनाने के लिए कोई मार्गदर्शन प्रोत्साहन की आवश्यकता है। तेयुप द्वारा आयोजित सीपीएस कार्यशाला एक मार्गदर्शन है, व्यक्तित्व विकास का यह बहुत अच्छा माध्यम है।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि सुखी समृद्ध और सौम्य जीवन जीने के गुर सीखने वाली यह क्लास जादुई चाबी है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि सीपीएस नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा। अभातेयुप का यह ट्रैक शत-प्रतिशत सही है। आत्मविश्वास का दीपक जलाने के लिए यह एक लौ है। साध्वी मेरूप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

सात दिवसीय कार्यशाला में संभागियों ने चरितार्थ करते हुए अपने आपको इस काबिल बनाया कि वे एक वक्ता के रूप में मंच पर प्रस्तुति कर सकें। सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी ने परिषद को बधाई दी। ट्रेनर अनिता गांधी ने अपने विचार व्यक्त किए। बैंगलोर से पधारे गदग प्रभारी राकेश दक ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी। अध्यक्ष दिनेश संकलेचा की टीम मंत्री कमलेश जीरावला, उपाध्यक्ष राजेंद्र जीरावला, उपाध्यक्ष नरेश भंसाली, संयोजक जितेंद्र जीरावला सहित सभी पदाधिकारियों का सहयोग इस कार्यक्रम में रहा। अभातेयुप द्वारा सभी संभागीय को सीपीएस कार्यशाला का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। अंत में मंत्री कमलेश जीरावला ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आयाम २०२१ कार्यशाला का आगाज

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा बैंगलोर स्तरीय कार्यशाला आयाम-२०२१ का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक मंगलाचरण से की गई। तत्पश्चात विजय गीत का संगान सभा मंत्री कन्हैयालाल गांधी एवं तेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम अनिल गादिया ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने कार्यशाला का विधिवत आगाज किया। तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया। किशोर मंडल द्वारा Cerebrum Quiz प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें बैंगलोर की समस्त किशोर मंडल ने भाग लिया।

अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने अपने वक्तव्य से किशोरों में ऊर्जा का संचार करते हुए किशोर मंडल को अपने जीवन की आध्यात्मिक व सामाजिक विकास की प्रेरणा दी।

मुख्य प्रशिक्षक पदम संचेती ने लाइफ-३६० डिग्री के द्वारा जीवन को सभी दिशाओं से देखने की कला सिखाई। तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय सहप्रभारी विशाल पितलिया का विशेष सहयोग रहा।

प्रायोजक परिवार सुवालाल राकेश दक का तेयुप परिवार ने सम्मान किया। इस अवसर पर अभातेयुप से पवन मांडोत, राकेश दक, तेयुप, विजयनगर, एचबीएसटी, राजाजीनगर के पदाधिकारी उपस्थित रहे। ब्लू ब्रिगेड टीम से रौनक नाहर और अरविंद पोखरना की उपस्थिति रही। तेरापंथ ट्रस्ट परिवार से निवर्तमान अध्यक्ष एवं परिषद परामर्शक लादूलाल बाबेल, भगवतीलाल मांडोत, तेममं से उपाध्यक्ष दीपिका गांधी, मंत्री गीता बाबेल, तेयुप उपाध्यक्ष-द्वितीय कमलेश चावत, मंत्री दिलीप पोखरना, आदि अनेक गणमान्यजन की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल के संयोजक सुजल बोहरा व सह-संयोजक शुभम बाबेल ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 - 19 सितंबर, 2021

✦ *विद्यार्थी ज्ञान के साथ सदाचार के संस्कारों को भी अर्जित करने का प्रयास करते रहें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

पर्युषण महापर्व का द्वितीय दिवस

संयम को सिंचन करने वाला अमृत है स्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ५ सितंबर, २०२१

पर्युषण पर्व का दूसरा दिन—स्वाध्याय दिवस। तीर्थंकर के प्रतिनिधि, स्वाध्याय प्रेरणा प्रदाता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के बारे में फरमाया कि हम मनुष्य क्षेत्र अढ़ाई द्वीप में हैं। अढ़ाई द्वीप में भी यह मध्यवर्ती जम्बूद्वीप।

इसी जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में महाव्रत विजय की नगरी, जिसका नाम था—जयंति। वहाँ का राजा शत्रु मर्दन था, उसके राज्य में पृथ्वी प्रतिष्ठान का एक गाँव था, उसके एक अधिकारी का नाम था—नयसार। पूज्यप्रवर ने भगवान महावीर के प्रथम भव नयसार के बारे में विस्तार से समझाया।

एक चक्र से रथ नहीं चलता, अनेक चक्रों से रथ चलता है। राजा सचिवों की नियुक्ति कर राज्य का संचालन करता है। राजा के चार आँखें होती हैं। वह गुप्तचरों की आँखों से देखता है। आदमी फ्री में न खाएँ। दूसरों से सेवा लेते हैं तो दूसरों को सेवा देने का भी प्रयास करें। आदमी सेवा से मेवा ले। निर्जरा की भावना साधु में रहे।

साधु को दान देने की भावना श्रावक रखें। 'मैं सदा आराम जीवी, साधु अहिंसा शूर है—धन्य वह दिन मुनिप्रवर को ये समर्पित करूँ।' साधु की साधना में श्रावक सर्विभावी बने। संतों को रास्ता बताया तो संत भी रास्ता बता सकते हैं। दूसरों को सिखाना, ज्ञान देना अच्छी बात है। वंदना करनी भी अच्छी चीज है। सम्यक्त्व की प्राप्ति होना बहुत बड़ी सफलता है, अनंतकाल की यात्रा की।

सम्यक्त्व के समान कोई रत्न नहीं है, दूसरा मित्र या बंधु नहीं है और सम्यक्त्व के समान दूसरा कोई लाभ नहीं है। सम्यक्त्व के बाद चारित्र अमूल्य रत्न है। चारित्र को भी सम्यक्त्व का आधार चाहिए। चारित्र को सम्यक्त्व की गरज है, सम्यक्त्व को चारित्र की गरज नहीं है। चारित्र परावलंबी है।

पर्युषण पर्व के अंतर्गत आज स्वाध्याय दिवस है। स्वाध्याय एक ऐसा तत्त्व है, जो संयम को सींचन देने वाला अमृत-जल है। स्वाध्याय करते-करते अच्छी जानकारियाँ मिल सकती हैं। २७ दिन से लेकर ३१ दिन की तपस्या को मासखमण की संज्ञा से अभिनीत करना चाहिए। ये बात कालू यशोविलास में आई हुई है। शिष्य गुरु का अनुगमन करे, यह विनय धर्म है।

छोटे-छोटे संत हमारे धर्मसंघ की नई पौध है। साध्वियाँ भी हैं, इनका ज्यादा से ज्यादा समय ज्ञानार्जन में नियोजित हो। वे लक्ष्य के साथ स्वाध्याय करे। इनका अच्छा विकास हो। छोटे-छोटे साधु-साध्वियों से स्वाध्याय-चितारने के बारे में जानकारी ली। ज्ञानाराधना के कई पाठ्यक्रम चलते हैं। हमारा ज्ञान बढ़े, वो हमारे चारित्र को सींचन देने वाला भी बनता रहे, यह काम्य है। स्वाध्याय दिवस के अवसर पर आचार्यप्रवर ने स्वाध्याय की महत्ता बताते हुए बाल मुनियों-साध्वियों से स्वाध्याय और अध्ययन का लेखा-जोखा लिया एवं सभी को निरंतर स्वाध्याय की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी का सारगर्भित वक्तव्य हुआ। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने स्वाध्याय दिवस के उपलक्ष्य में गीत का संगान किया।

मुनि पारस कुमार जी द्वारा तपस्या में नव कीर्तिमान—आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में मुनि पारसकुमार जी ने ४८ की तपस्या का प्रत्याख्यान करते हुए धर्मसंघ में नव कीर्तिमान बनाया। मुनिश्री इससे पूर्व भी अनेक प्रकार के विभिन्न तप संपन्न कर चुके हैं। जिनमें १ से ४७ तक की लड़ी दो बार धर्मचक्र, ५१, ५४ दिन की तपस्या प्रमुख है। संतों में इस प्रकार की तपस्या करने वाले मुनि पारस कुमार जी एकमात्र संत हैं। आचार्यप्रवर ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए मुनिवर को अग्रगणी की वंदना करवाई।

कार्यक्रम में मुनि मुकुल कुमार जी, साध्वी तेजस्वीप्रभा जी ने अपनी प्रस्तुति दी। बड़ोदा कबीर आश्रम से समागत साध्वी सुबुद्धि साहेब ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

प्रतिसेवना का दोष लगे तो उसकी शुद्धि कर लेनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २ सितंबर, २०२१

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के दसवें अध्याय के ६९वें सूत्र में बताया गया है कि एक शब्द है—प्रतिसेवणा। यह एक दोष-सेवन का कार्य होता है। प्रतिसेवन यानी प्रतिकूल सेवन। साधु को जो करणीय है, जो सेवन करना है, उसके प्रतिकूल चला जाना। वो प्रति सेवना है। प्रति सेवन के भी दस प्रकार बताए गए हैं—दर्प प्रतिसेवणा, प्रमाद प्रतिसेवणा, अनाभोग प्रतिसेवणा, आतुर प्रतिसेवणा, आप्रत प्रतिसेवणा, शंकित प्रतिसेवणा, सहसा करण प्रतिसेवणा, भय प्रतिसेवणा, प्रदोष प्रतिसेवणा, विमर्श प्रतिसेवणा। दोष-सेवन के भी अनेक स्तर हो सकते हैं। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में दोष का सेवन किया जा सकता है।

हम साधु संस्था के संदर्भ में ध्यान दें कि दर्प प्रतिसेवणा। एक साधु उद्दंड भाव से हिंसा आदि का काम कर लेता है, वह एक खराब-बड़े स्तर का दोष हो जाता है। प्रमाद-प्रतिसेवणा। जैसे कोई विकथा में लग गया। अनाभोग प्रतिसेवणा यानी भूल से हो गया। चौथा प्रकार-आतुर प्रतिसेवणा कोई भूख-प्यास आदि से आतुर होकर कोई दोष का सेवन कर लिया। पाँचवाँ—आप्रत-प्रतिसेवणा कोई आपदा की स्थिति आ जाने पर दोष का सेवन करना पड़ जाए। आपदा चार प्रकार की होती है—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः और भावतः आपद।

छठा है—शंकित प्रतिसेवणा—शंका होने पर दोष का सेवन हो जाना। सहसाकरण प्रतिसेवणा अकस्मात् होने वाला प्राणातिपात आदि दोष का आसेवन। आठवाँ है—भय प्रतिसेवणा—भय के कारण से दोष लग जाना। नौवाँ है—प्रदोष प्रतिसेवणा—क्रोध आदि से किया जाने वाला प्राणातिपात दोष सेवन। दसवाँ है—विमर्श प्रतिसेवणा—कभी-कभी गुरु शिष्यों की परीक्षा के लिए सचित भूमि आदि पर चलने लग जाते हैं। शिष्यों की प्रतिक्रिया जानने के लिए दोष का सेवन करना।

साधु जीवन में अनेक रूपों में प्रतिसेवणा हो सकती है। प्रतिसेवणा के संक्षेप में दो प्रकार भी है—दर्पिका और कल्पिका। दर्पिका यानी उद्यत-अहंकार आदि के कारण व कल्पिका यानी परिस्थिति के कारण दोष का सेवन हो जाना। परिस्थिति के अनुसार ही दंड की मात्रा ज्यादा कम व सामने वाले के स्वास्थ्य की स्थिति देखकर दंड देना पड़ता है।

प्रयास करें कि साधु के प्रतिसेवना का दोष लगे ही नहीं, अगर लग जाए तो उसकी शुद्धि कर लेनी चाहिए। छठे गुणस्थान में भी साधु-साधु में पूनम के चंद्रमा के समान चारित्र वाला है, तो कोई चौथ या दूज के समान चारित्र वाला हो सकता है, निर्मलता में अंतर हो सकता है।

दोष लग गया है, तो भावना अच्छी रहे कि कहीं मैं विराधक न हो जाऊँ। मेरी शुद्धि हो जाए। गलती हो जाए तो शोधन हो जाए। यह काम्य है।

पर्युषण का समय अब सामने आ रहा है। पर्युषण का अच्छा क्रम हमारा चले, अच्छी धर्माराधना चले। आध्यात्मिक उत्साह बना रहे। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

प्रवचन से पूर्व स्थानीय न्यायाधीशों एवं एडवोकेट का समूह पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचा। पूज्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आप लोगों के जीवन में सच्चाई, कर्तव्यपालन और अहिंसा की भावना बनी रहे। कर्म के साथ धर्म को जोड़ना चाहिए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हम अध्यात्म में प्रवेश नहीं करेंगे, तो इससे अच्छा अवसर मिलने वाला नहीं है। जीवन में उतार-चढ़ाव के अनेक पड़ाव आते हैं। उतार चढ़ाव की और चढ़ाव उतार की प्रेरणा देता है।

मुनि संबोध कुमार जी एवं साध्वी कमनीयप्रभा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

राकेश मांडोत, चेन्नई ने अमृत वाणी में ओम अर्हम् गीत संकलन का तीसरा भाग श्रीचरणों में अर्पित किया। प्रमिला गोखरू, सुमन भलावत ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**